WWW.IJCRT.ORG
7.97 Impact Factor by google scholar

IJCRT
editor@ijcrt.org

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal
ISSN Approved | ISSN: 2320-2882 | UGC Approved Journal No: 49023 (2018)

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

Scholarly Open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.97 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI), Monthly, Multidisciplinary and Multilanguage (Regional language supported)

- Publisher and Managed by: IJPUBLICATION

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal

ISSN: 2320-2882 | Impact factor: 7.97 | ESTD Year: 2013

Website: www.ijcrt.org | Email: editor@ijcrt.org

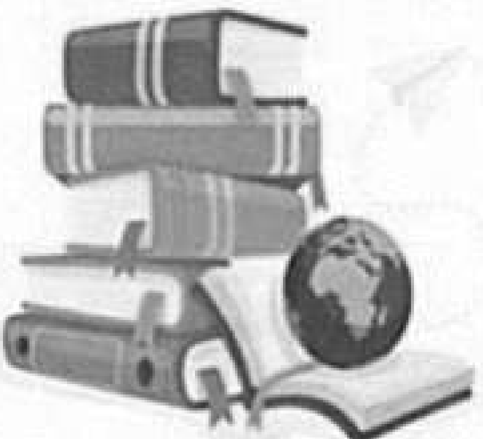

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (ISSN: 2320-2882)

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal

ISSN: 2320-2882 | Impact factor: 7.97 | ESTD Year: 2013

This work is subjected to be copyright. All rights are reserved whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, re-use of illusions, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other way, and storage in data banks. Duplication of this publication of parts thereof is permitted only under the provision of the copyright law, in its current version, and permission of use must always be obtained from IJCRT www.ijcrt.org Publishers.

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS is published under the name of IJCRT Publication and URL: www.ijcrt.org.

© IJCRT Journal

Published in India

Typesetting: Camera-ready by author, data conversation by IJCRT Publishing Services – IJCRT Journal.

IJCRT Journal, WWW.IJCRT.ORG

ISSN (Online): 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT) is published in online form over Internet. This journal is published at the Website http://www.ijcrt.org, maintained by IJCRT Gujarat, India.

ISSN 2320-2882

9 772320 288000

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLE...
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JA...

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोध पत्र

महिला इंटरनेट जागरूकता अभियान की सार्थकता का अध्ययन

A STUDY OF THE SIGNIFICANCE OF WOMEN'S INTERNET AWARENESS CAMPAIGN

डॉ.
भारती शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्सबी.
एड. कॉलेज,
जयपुर

1. शोध सार :–

पण्डित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में "You Can tell the condition of nation by looking at the tatu of its women"

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्अ है, लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि शासन में सभी की भागीदारी सुनिश्चित हाकिन्तु देश की लगभग आधी जनसंख्या जो महिलाएँ है उनमे

इंटरनेट का उपयोग करने वाला में से केवल 30 प्रतिशत महिलाएँ

(स्त्रोत : 1 क्यूब डाटा, जून 2013) है। महिलाओं की इंटरनेट केप्रति जागरूकता आज भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। अध्ययनों से पता चलता है कि अगर महिलाएँ इंटरनेट का उपयोग करती है तो इससे

BIYANI ... COLLEGE
SEC-3, VI... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में स्वच्छ भारत अभियान में उनकी विद्यालय वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. भारती शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तुतकर्त्री
आकांक्षा जायसवाल
एम.एड.छात्रा

सारांश –
स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिषन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रिय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। जो कि चलाया जा रहा है जिससे शैक्षिक स्तर एवं पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्य कर्मो को बढ़ा देना, गलियों एवं सड़को की सफाई, देष के बुनियादी ढ़ाँचे का बदलना आदि शामिल है। स्वच्छ भारत अभियान को अधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी जी की 145 वीं जयंती पर प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया जाता। यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देषभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है। और देष को स्वच्छत देष बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवष्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विष्व स्तर पर लोगों ने पहल की है।

प्रस्तावना –
"स्वच्छता ही देश की है सौन्दर्य, जिसे लाना है हमारा कर्तव्य कहते है कि न बूंद–बूंद से सागर भरता है ठीक महत्व प्रकार हर इन्सान स्वच्छता और सफाई का महत्व समझने लगे तो फिर अपने देश को स्वच्छ बनने में देर नही लगेगी।"

"चलाओ जोरो से स्वच्छता अभियान,
तभी तो बनेगा हमारा भारत महान"

नई दिल्ली में राजपथ पर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "2019 में महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर भारत उन्हें स्वच्छ भारत के रुप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि दे सकता है।" 2 अक्टूबर 2014

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में अंतर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. भारती शर्मा

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री

निशा अग्रवाल

(एम एड छात्रा)

सारांश –

जीवन के वास्तविक अनुभवों एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए "श्रीमद्भागवत गीता" में वर्णित "श्री हरि कृष्ण" के दिये गए उपदेशों को समाहित किया गया है। वर्तमान समय में सभी ने कोरोना महामारी जैसी समस्या का सामना किया जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक समस्यायें जैसे पढ़ाई में मन नहीं लगना, लक्ष्य का निर्धारण नहीं हो पाना, आदि समस्याओं के समाधान हेतू शोधार्थी ने वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में अंतर्निहित शैक्षिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन का चुनाव किया। जिसमें प्रत्येक अध्याय से शैक्षिक मूल्यों का चुनाव किया गया व उन्हें वर्तमान परिस्थिति से जोड़ते हुए एक मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली सरल भाषा में तैयार करके विद्यार्थियों से मूल्य चुनाव करने को कहा। जिसे पढ़कर विद्यार्थियों को शैक्षिक समस्याओं का समाधान मिला। जैसे – एकाग्रता, लक्ष्य के निर्धारण की आवश्यकता, भविष्य संचेता आदि। शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भागवत गीता में अन्तर्निहित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन सार्थक सिद्ध हुआ।

प्रस्तावना –

श्रीमद्भागवत गीता महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। श्रीमद्भागवत गीता का दिव्य ज्ञान महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अपने सखा (दोस्त) कुंती पुत्र अर्जुन को सुनाया था जब अुर्जन महाभारत के युद्ध मे विचलित होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे थे क्योंकि वे अपने ही लोगों से युद्ध करना नही चाहते थे। धर्म ग्रंथ के आंकडों के अनुसार भगवत गीता का उपदेश भगवान श्री कृष्ण ने अुर्जन को आज से लगभग 7000 वर्ष पूर्व दिया था। इसकी खासियत यह है कि यह दिव्य ज्ञान आज के दिन मे भी उतना ही प्रासंगिक और उपयोगी है जितना पूर्व मे था और तब तक

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

श्रमिको के बालको पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका	प्रस्तुतकर्त्री
डा. भारती शर्मा	रेखा शर्मा
(असिस्टेंट प्रोफेसर)	(एम.एड.छात्रा)

सारांश

वर्तमान समय मे जब कोरोना के कारण जब समस्त स्कूल –कालेज व शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए तो सरकार द्वारा सभी क्षेत्रो मे ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था की गई लेकिन जब हम श्रमिको की बात करते है तो उन लोगो के लिए दो वक्त का खाना भी मुश्किल है, लोगो को अपने बालको को ऑनलाइन शिक्षा दिलाने मे काफी परेशानियो का सामना करना पड रहा है । इसी कारण शोधकर्त्री ने श्रमिकों के बालको पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन **"श्रमिकों के बालकों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन"** के अन्तर्गत शोध कार्य किया । इस शोधकार्य को जयपुर जिले के शहरी श्रमिको के 300 बालक तथा ग्रामीण क्षेत्र के 200 पर किया गया तथा शोध अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शहरी क्षेत्र के बालको की मानसिकता पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिको के बालकों से अधिक है ।

मूल शब्द: जयपुर जिला, ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिको के बालक, शहरी क्षेत्र के श्रमिको के बालक, ऑनलाइन शिक्षा, मानसिकता , प्रभाव आदि ।

1. प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे शिक्षा का सबसे अधिक महत्व होता है और उसका कैरियर भी शिक्षा पर आधारित होता है । शिक्षा के द्वारा ही इंसान का भविष्य उज्जवल बनता है । यदि कोई व्यक्ति अपनी शिक्षा किसी कारणवश जारी नही रख पाता है, तो उसके लिए ऑनलाईन शिक्षा हासिल करना बेहतर विकल्प है । इस डिजीटल शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत वह अपने घर मे बैठकर अध्ययन कर सकता है ।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के व्यक्तित्व मूल्यो (प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण) का अध्ययन करना।

निर्देशिका

प्रस्तुतकर्त्री डॉ. एकता पारीक

मंजू बाला प्राचार्या

एम.एड.छात्रा बियानी बी.एड. गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

प्रस्तावना –

व्यक्तित्व को` अनेक गुणो` तथा लक्षणो` का संग्रहण माना जाता है। इन गुणो` की मात्रा तथा लक्षणो` का `मापने की प्रवृति पाई जाती है। मनुष्य के व्यक्तित्व के मापन का इतिहास बहतु परु ाना है। हमारे देश मे मनुष्य से तात्पर्य उसक` शारीरिक स्वास्थ्य, सौन्दर्य, तार्कि तात्रिक, ज्ञान, सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, सुखदायी, शक्ति मूल्य आदि के विकास से लिया जाता है। अतः इनके मलू य का मापन भी इसके विकास का आधार है। वर्तमान मे हम व्यक्तित्व मलू य के विषय मे `एकमत नही है आने र न ही व्यक्तित्व मापन के विषय मे। अतः यह स्वाभाविक है कि शिक्षा के क्षत्रे मे` लक्ष्य का` प्राप्त करने हते ु मलू यांक न काय` को सार्थक बनाने के लिए एसे ी प्रविधियो का विकास किया जाता है जसके माध्यम से व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षो` के विषय मे` जानकारी एवं सूचनाएँ प्राप्त हो सके। इन प्रविधियो का प्रयागे परिस्थितियो के अनुसार किया जाता है। प्राचीनकाल मे व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या और उसके मापन की विधियो का विकास पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको` ने शुरू किया।

तकनीकी शब्दो का परिभाषीकरण –

व्यक्तित्व – व्यक्तित्व एक व्यक्ति के पठन, व्यवहार के तरीको, रूचियो, दृष्टिकाणे ा, क्षमताओ और तरीको` का सबसे विशिष्ठ संगठन है।

शाधे ा के उद्देश्य –

1. उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के व्यक्तित्व मूल्यो का अध्ययन करना। शाधे ा की परिकल्पना – उच्च माध्यमिक स्तर की के व्यक्तित्व मूल्य में काइे` सार्थक अंतर नहीं है।

शाधे ा की विधि – प्रस्तुत शाधे ा कार्य मे सर्वेक्षण विधि का

प्रयागे किया गया है।

शाधे ा मे` प्रयुक्त चर – प्रस्तुत अध्ययन मे चर के रूप मे केवल व्यक्तित्व मूल्य को ही लिया गया है। जनसंख्या –

प्रस्तुत शाधे ा कार्य मे जनसंख्या के रूप मे जयपुर शहर के 100 विद्यार्थियो (50 शहरी व 50 ग्रामीण) का चयन किया गया है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYAD... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की की व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति अभिवृति का अध्ययन

निर्देषिका
डॉ. एकता पारीक
प्राचार्य

प्रस्तुतीकर्ता
राजकुमारी घासल
एम.एड.छात्रा

सारांश–

व्यावसायिक कोर्स अर्थात व्यवसाय से जुड़ी हुई षिक्षा देना है। व्यावसायिक षिक्षा से तात्पर्य है कि किताबी ज्ञान बाहरी ज्ञान या व्यवहारिक ज्ञान के साथ–साथ कौषलात्मक ज्ञान था। व्यावसायिक ज्ञान भी होना आवष्यक है। जिससे बेरोजगार न रहकर सभी के पास रोजगार प्राप्त हो-व्यावसायिक षिक्षा से छात्रों में बुनियादी ज्ञान कौषल और प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है। कोरोना काल में अच्छी षिक्षा वाले लोग भी बेरोजगार हो गये थे। इसलिये ऐसी समस्या का सामना दोबारा से नही करना पड़े इसलिये अनिवार्य रूप से व्यावसायिक कोर्स पर जोर देना चाहिये। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुये शीर्षक वर्तमान परिपेक्ष्य में व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन के अन्तर्गत शोध कार्य किष। इस शोध कार्य को जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक षिक्षा परिषद मा.षि. राज. बोर्ड द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के दो संकायों के 15–15 छात्रो पर शोध किया तथा शोध अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला संकाय से वाणिज्य संकाय मे व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति सार्थक रूप अधिक है।

मूल शब्द– राज. (जयपुर शहर) उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय, वाणिज्य संकाय और व्यावसायिक कोर्स आदि।

1. **शोध का शीर्षक–** वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे व्यावसायिक कोर्स के चुनाव के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के दृष्टिकोण का अध्ययन।
2. **प्रस्तावना–** :–

व्यावसायिक षिक्षा का विद्यालयो द्वारा पाठ्यक्रम मे व्यावसायिक षिक्षा को शामिल करने के प्रयासो से है, जिससे छात्रो मे बुनियादी ज्ञान, कौषल और प्रतिभा को विकसित किया जा सके। सरल शब्दो मे षिक्षा मे व्यावसायिकरण का अर्थ सामान्य षिक्षा के साथ–साथ किसी व्यवसाय से संबधित प्रषिक्षण देना।

व्यवसायिक षिक्षा जिसे कैरियर और तकनीकी षिक्षा के रूप मे भी जाना जाता है। छात्रों को व्यापार, षिल्पी या तकनीकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों मे विषेष और प्रषिक्षण प्राप्त करने मे सक्षम बनाती है।

व्यावसायिक षिक्षा मे कम शैक्षणिक षिक्षा शामिल है और यह मूल रूप से मैनुअल या व्यावहारिक गतिविधियों और प्रषिक्षण पर केन्द्रित

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDH... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमद्भगवत गीता में निर्हित आध्यात्मिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. एकता पारीक

(प्राचार्या)

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री

मनभर कुमारी सैनी

(एम एड छात्रा)

सारांश –

जीवन के वास्तविक अनुभवों एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए "श्रीमद्भागवत गीता" में वर्णित "श्री हरि कृष्ण" के दिये गए उपदेशों को समाहित किया गया है। वर्तमान समय में युवा वर्ग कम मेहनत मे अधिक फल का इच्छुक हो जिसके कारण वह कर्म आध्यात्मिक समस्यों से जुझ रहा है और युवा वर्ग आक्रमक व्यवहार करते है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ पनप रही है। इन समस्याओं के समाधान हेतू शोधार्थी ने वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में आध्यात्मिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन का चुनाव किया। जिसमें प्रत्येक अध्याय से आध्यात्मिक मूल्यों का चुनाव किया गया व उन्हें वर्तमान परिस्थिति से जोड़ते हुए एक मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली सरल भाषा में तैयार करके विद्यार्थियों से मूल्य चुनाव करने को कहा। जिसे पढ़कर विद्यार्थियों को शैक्षिक समस्याओं का समाधान मिला। जैसे – एकाग्रता, लक्ष्य के निर्धारण की आवश्यकता, भविष्य संचेता आदि। शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भागवत गीता में अध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन सार्थक सिद्ध हुआ।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कला षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
प्राचार्या

प्रस्तुतकर्त्री
बीनू कुमारी यादव
एम.एड.छात्रा

सारांश –

कोठारी कमीशन ने कहा है कि भारत का भविष्य अपनी कलाओं मे रूपायित हो रहा है। इस दिषा में कला शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। युवा पीढ़ी को मानवीय मुल्यो की शिक्षा देने हेतु कला शिक्षा के महत्व को हमारे दार्शनिकों, शिक्षाशास्त्रियों और समाज सुधारको ने एकमत से स्वीकार किया है।

कला–शिक्षा के कई उद्देश्य रहे है जैसे चित्रकला के माध्यम से नैतिक शिक्षा देना अवकाश का समय का सदुपयोग करना और उससे सांस्कृतिक उन्नति करना। कला–शिक्षा के लिए मूल्य संसाधन है। छात्र उनका सांस्कृतिक व प्राकृतिक पर्यावरण बच्चे की अभिव्यक्ति का निकटतम तथा प्रियतम माध्यक उसकी मातृभाषा है।

सौंदर्य बोध स्वरूप जीवन के लिये आवष्यक है। सत्यम शिवम् सुन्दरम् आत्मा के प्रेरक गुण है।

एक शिक्षाविद् ने कहा है कि सौंदर्य बोध की क्षति से न केवल भावात्मक कल्याण तथा आनन्द का एक महान स्त्रोत कट जाता है। बल्कि उससे मानसिक और षारीरिक स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती है।

प्रस्तावना –

आधुनिक से पूर्व या पीछे तक जाये तो आदि मानव के लिए कला एक उल्लासात्मक अभिव्यक्ति का मार्ग था। आज वर्तमान मे भी यही अभिव्यक्ति मानव अपनी नवीन कृतियो मे परिलक्षित कर रहा है। बालक की षिक्षा व्यवस्था मे इस अभिव्यक्ति को नियमित विकास एवं अवसर प्रदान के लिए कला–षिक्षा विद्यालय स्तर पर अनिवार्य शिक्षा का विषय बन गया है।

कला अध्ययन के रूप मे चित्रकला की कक्षा हो ये आवश्यक है तथा बच्चो मे रंगो रेखाओं और संयोजन के प्रति संवेदना जगे ऐसा वातावरण मिले यह भी अनिवार्य है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर पर भुगोल विषय के षिक्षण में षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता का अध्ययन

निर्देषिका

डॉ. एकता पारीक

प्राचार्य

प्रस्तुतीकर्ता

अनिता कुमावत

एम.एड.छात्रा

सारांश:–

षिक्षा षिक्षक एवं बालक के बीच की अनंत क्रिया है। प्रारम्भ मे षिक्षा षिक्षक केन्द्रित थी किन्तु वर्तमान ने षिक्षण पद्धति में परिवर्तन आया है।

विषयवस्तु को रोचक व प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत करने हेतु षिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्ययन मे उच्च स्तर पर भूगोल विषय के षिक्षण मे षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता का अध्ययन किया है। जिसमे प्रथम समूह के 60 छात्रों को परम्परागत षिक्षण विधि के द्वारा पढ़ाया गया तथा द्वितीय समूह के 60 छात्रो को षिक्षण अधिगम सामग्री से क्रियात्मक रूप मे भूगोल विषय पढ़ाया गया।

जिसके कारण इनकी उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति मे धनात्मक सह संबंध पाया गया है।

मूल शब्द– जयपुर के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र निजी विद्यालय और षिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावषीलता आदि।

प्रस्तावना:–

किसी भी राष्ट्र की प्रगति समृद्धि व संस्कृति का मूलाधार षिक्षा ही होती है। षिक्षा ही वह ज्योति पुंज है, जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके मुक्ति का मार्ग दिखाती है। तथा समाज मे कीर्ति का प्रकाष फैलाती है। साथ ही षिक्षा हमारी समस्याओं को सुलझा कर हमारे समस्याओं को सुलझा कर हमारे ज्ञान में विकास करती है। इसी प्रकार षिक्षा को ठीक से समझाने के लिये षिक्षक द्वारा विभिन्न साधनों का उचित प्रयोग किया जाता है। क्योंकि पाठ्य पुस्तक मे परम्परागत सामग्रिया तो है ही एनिमेषन आदि नई सामग्री भी इसमे जुड गई। इन सामग्रीयो के माध्यम से सीखा ज्ञान न केवल छात्रों मे उत्साह जाग्रत करता है परन्तु सीखे हुवे ज्ञान को लंबे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रखने में भी सहायक होता है। इससे छात्र व षिक्षक अधिगम सामग्री द्वारा पाठ्य सामग्री को रोचक माध्यम मे प्रस्तुत किया जाता है, जिससे न केवल छात्रो का ध्यान केन्द्रित होता है, बल्कि उन्हे उचित प्रेरणा भी देती है। चाहे वह वास्तविक वस्तु हो या चित्र चार्ट या अन्य कोई तकनीकी उपकरण सभी से छात्रों के मस्तिष्क मे एक चित्र का निर्माण होता है।

<u>शोध अध्ययन मे प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण</u>

<u>उच्च माध्यमिक स्तर:–</u> उच्च माध्यमिक से तात्पर्य कक्षा 11वी व 12वी मे षिक्षा ग्रहण करने वाले बालको से है। (राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 के अनुसार)

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYA... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

निर्देशक
डॉ. मनीष सैनी
प्रोफसेर

प्रस्तुतकर्त्री
अर्ज़ हिडवानियाँ असिस्टेंट
एम.एड.छात्रा

सारांश –

योग का हमार` जीवन मे` क्या प्रभाव पड़ता है। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। आप स` 50 वर्ष पूर्व यागे का अध्ययन अध्यापन ऋषियो` तथा महर्षियों का विषय रहा ही माना जाता था। लेकिन योग अब आम लोगो के मानसिक और शारीरिक रोग मिटाने मे` लाभदायक सिद्व हो रहा है।

योग का नियम से और नियमित अभ्यास करने स` सबसे पहल` हमार` शरीर स्वस्थ बनता है। शरीर के स्वस्थ रहने स` मन और मस्तिष्क भी ऊर्जावान बनत` है। दोना` के साहे तमंद रहने स` ही आत्मिक भी ऊजार्व ान बनते है। दोनो के साहे तमंद रहने से ही आत्मिक सुख की प्राप्ति हाती है। यह तीनो के स्वास्थ्य तालमेल से ही जीवन खुशी और सफलता मिलती है। मान लो यदि हमार` जीवनकाल 70 स` 75 वर्ष है। तो उसमे स` भी शायद 20–25 वर्ष ही हमार` जीवन के कार्यशील वर्ष होंग` । उन कार्यशील वर्षो मे` भी यदि हम अपने स्वास्थ्य और जीवन की स्वस्थता का` लके र चिंतित है। तो फिर कार्य कब करेंगे। जबकि कर्म स` ही जीवन मे` खुशी और सफलता मिलती है। योगासनो के नियमित अभ्यास स` मेरुदंड सुदृढ बनता है। जिसस` शिराओ` और धमनियो` का` आराम मिलता है। शरीर के सभी अग –प्रत्यंग सुचारु रूप स` कार्य करते है। प्राणायाम द्वारा प्राणवायु शरीर के अनु–अनु तक पहुंच जाती है। जिसस` अनावश्यक एंव हानिप्रद द्रव्य नष्ट होत` है विशेष निर्वासित होत` है। जिसस` सुखद नींद अपने समय पर अपने आप आने लगती है। प्राणायाम और ध्यान स` मस्तिष्क आम लोगो` की अपेक्षा कही ज्यादा क्रियाशील और शक्तिशाली बनाता है। प्रस्तावना –

योग शब्द का जन्म संस्कृत शब्द "युज" से हुआ है जिसका अर्थ है। स्वयं का सर्वश्रेष्ठ स्वयं के साथ मिलन पतंजलि योग के अनुसार योग का अर्थ है। मन का` नियंत्रित मे` रखना योग की कई शैलिया है, लेकिन हर शैली का मूल विचार मन का` नियंत्रित करना है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDH... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशक प्रस्तुतकर्त्री

डॉ. मनीष सैनी

कमलेश कुमारी असिस्टेंट प्रोफेसर

एम.एड.छात्रा

सारांश – प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है। प्रत्येक वस्तु पर परिवर्तन का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया भी इस परिवर्तन से परे नहीं है। आज का युग तकनीक प्रयाग युग है अत एव परम्परिक शिक्षण विधि की आवश्यकता महसूस होने लगी है, इसलिए शोधकर्ता ने बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियो के व्यक्तित्व एव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन मे प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। कक्षा ग्यारहवी के 100 विद्यार्थियो के दो समूह बनाकर एक समूह को परम्परागत शिक्षण विधि व दूसरे समूह को बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर शिक्षको ने बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गयी व छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ी। बहुमाध्यम उपाग का प्रभाव छात्रो के व्यक्तित्व पर सकारात्मक पड़ा है। अतएव कक्षा शिक्षण को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिए बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण परम्परागत शिक्षण विधि की तुलना मे छात्रो के लिए लाभप्रद है।

प्रस्तावना – किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि मे विज्ञान और तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है. यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य मे स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है। नई पीढ़ी अपनी खोजी प्रवृति के कारण पूर्व ज्ञान के आधार पर नित नये आविष्कारो को जन्म दे रही है। इन आविष्कारो की श्रृंखला मे कक्षा शिक्षण अध्ययन अध्यापन मे बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य मे इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। समस्या का औचित्य – बहुमाध्यम उपागम मे बहुमाध्यम शब्द एक से अधिक माध्यम की ओर संकेत करता है। इस उपागम मे एक से अधिक तकनीको और साधनो का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु को छात्रो तक पहुंचाने के लिए शिक्षक के द्वारा अनेक माध्यमो का प्रयोग किया जाता है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों में संस्थागत दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. मनीष कुमार सैनी

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तुतकर्त्री

नेहा झिरवाल

एम.एड.छात्रा

सारांश –

व्यक्ति समाज की इकाई होने के कारण उसका आत्म प्रकाशन समाज से प्रभावित होता है और व्यक्ति की सामाजिक क्रिया समाज मे ही संभव है। अतः व्यक्ति के समाज मे जितने संतुलित सामाजिक सम्बन्ध होगें उतना ही उसका मानसिक संतुलन अच्छा होगा। यदि मानसिक संतुलन अच्छा नही है, तो मानसिक तनाव, दण्ड, भय निराशा, विद्रोही की भावना पनपती है जिनके कारण व्यक्ति अनेक प्रकार के दबाव महसूस करने लगता है और उसके बौद्धिक स्तर की तुलना मे न्यून सम्प्राप्ति किसी सजग अध्यापक के लिए चिन्ता का विषय हो सकती है इसी के फलस्वरूप वह बालक के परिवार के बारे में एवं उसके व्यक्तित्व पाठ्यक्रम अध्ययन, अध्यापन प्रणाली तथा स्वयं अपने जीवन दर्शन या मूल्य आत्मावलोकन करता है इसीलिए शिक्षक को बालकों के व्यक्तित्व के विकास एवं चरित्र निर्माण के लिए इनकी पारिवारिक स्थिति को ध्यान मे रखना चाहिए। प्रायः हम देखते है कि कुछ विद्यार्थी अमीर होते है।

प्रस्तावना –

ठपकरण

ठमसवू चैम घ्वअमतजल स्पदम ष्ठच्स्द्व थ्ंउपसपमे वा ैजनकमदजे इमसवू जीम घ्वअमतजल स्पदमष्

गरीबी को आर्थिक स्थितियो की कमी के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। इसमें रुपये तथा सफलतापूर्वक जीने के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की कमी दोनों को शामिल किया जाता है जैसे कि भोजन, पानी, आवास, कपड़ा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि।

गरीबी रेखा वह न्यूनतम स्तर होता है जो कि किसी देश मे जीवनयापन करने के लिए पर्याप्त साधनों को खरीद सकने की क्षमता से कम होता है। एक औसत व्यस्क जो कुछ भी अपनी आवश्यकताओं को प्राप्त करने हेतु कुल किमत चुकाता है, उसी के आधार पर गरीबी का निर्धारण किया जाता है। यह विचारधारा आवश्यकता आधारित मूल्यांकन से प्रभावित होती है, जो कि न्यूनतम खर्च को आधार

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"जयपुर जिले के प्राथमिक स्तर पर अध्यापक-अभिभावक सम्पर्क कार्यक्रम की भूमिका के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन"

डॉ मनीष सैनी

असिस्टेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1- शोध का शीर्षक –

"जयपुर जिले के प्राथमिक स्तर पर अध्यापक–अभिभावक सम्पर्क कार्यक्रम की भूमिका के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन।"

2- संप्रत्यात्मक पृष्ठभूमि –

वर्तमान समय को देखते हुए बच्चों के विकास में अभिभावक कीभूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। इस भूमिका के निर्वाह मेंस्कूलों के साथ उनका अच्छा तालमेल और समन्वय होना जरूरी है।

बच्चों के विषय में शिक्षक से वास्तविक पृष्ठपोषण लेने के लिए स्कूलों में आयोजित होने वाली अभिभावक-शिक्षक सम्पर्क कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी से भाग लेना ही अभिभावक-शिक्षक सम्पर्क कार्यक्रम कहलाता है।

P.T.M. d mi; &

इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा विभाग द्वारा और कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया जिसकेअनुसार अभिभावक शिक्षक सम्पर्क कार्यक्रम के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

(1) प्राथमिक स्तर पर अध्यापक–अभिभावक सम्पर्क कार्यक्रम से अध्यापकों और अभिभावकों के बीच विचारों बढ़ता है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRL… COLLEGE
SEC-3, VIDHY… JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

A Comparative Study of Scientific Attitude and Environmental Awareness Among Senior Secondary School Students of Jaipur City

Meenakashi Tiwari*, Dr Manish Saini, Biyani Girls B.Ed College, Jaipur

Abstract

Environment is a broad term. It includes biotic and abiotic component. Nowadays environmental problems are one of the most serious ones. Future society will face more troublesome situations and work harder to solve what we have done. Therefore, developing awareness through the education is the first step for starting to diminish the bad footprints of human beings on the Earth. Hence, how awareness of students could be developed and improved should be the key point of educational programs. Within this respect, the purpose of this study is to assess the relationship between environmental awareness of students and scientific attitude. The present study has been conducted to investigate the environmental awareness of school students with respect to their scientific aptitude. Result of the unscientific exploitation of natural resources by human being. There is an urgent need to create environmental awareness among all human beings to conserve, protect and nurture our environmental resources. Consequently the study was conducted on a random sample of 108 school students of Jaipur city. The finding of the study indicated that environmental awareness has positive with scientific attitude among students and Level of environmental awareness interm of components attitude significantly differ to each other. Female students have higher scientific attitude compared to male students.

KEYWORDS: Environmental awareness; Environmental pollution; Environmental Awareness Ability Measure, Higher Secondary School Students, type of school.

1. Introduction

The term 'environment' means, simply, nature, in other words, the natural landscape together with all of its non-human features, characteristics and processes. The environment is often closely related to notions of wilderness and of pristine landscapes that have not been influenced - or, at least, that have been imperceptibly influenced - by human activities. However, for other people, the term 'environment' includes human elements to some extent. In popular usage, the notion of the 'environment' is associated with diverse images and is bound up with various assumptions and beliefs that are often unspoken - yet may be strongly held. All of these usages, however, have a central underlying assumption: that the 'environment' exists in some kind of relation to humans. Hence the environment is, variously, the 'backdrop' to the unfolding narrative of human history, the habitats and resources that humans exploit, the 'hinterland' that surrounds human settlements, or the wilderness that humans have not yet domesticated or dominated.

In its most literal sense, environment simply means surroundings (environs); hence the environment of an individual, object, element or system includes all of the other entities with which it is surrounded. Thus the 'environment' may be regarded as a 'space' or a 'field' in which networks of relationships, interconnections and interactions between entities occur. The notion of interrelationship is a central one in environmental science, since many environmental issues have occurred because one environmental system has been disturbed or degraded - either accidentally or deliberately - as a result of changes in another.

PRINCIPAL
BIYANI GIR... COLLEGE
SEC-3, VIDHYA... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अभिभावकों की अपेक्षाओं का प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

Dr. Sarika
Sharma

असिस्टेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1 प्रस्तावना

प्रत्येक प्राणी मे अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशीलता होता है किन्तु मनुष्यों मे अपनी उच्च मानसिक योग्यताओं के कारण सृजनशीलता अपेक्षाकृत अधिक होती है। मनुष्यो मे भी सृजनशीलता समान नही होती है । कुछ व्यक्ति अधिक सृजनशील व्यक्ति पाये जाते है। इन्ही सृजनशील व्यक्ति पाये जाते है। इन्ही सृजनशील व्यक्तियों पर राष्टअ तथा समाज की उन्नति तथा उत्थान निर्भर हुआ करता है। शिक्षा के क्षेत्र मे सृजनात्मकता का अत्यन्त महत्व है। सृजनात्मकता से ही छात्रों की प्रतिभा का विकसित किया जाता है।

यदि हम अपने विकास पर नजर डाले तो देखेंगे कि प्राचीन युग से लेकर वर्तमान युग तक मानव ने तीव्र गति से परिवर्तन किया है। प्राचीन जीवन शैली परिवर्तित हो चुकीहै। वर्तमान मे औद्योगिकीकरण व नगरीकरण के साथ साथ आवश्यकताओं मे औद्योगिकीकरण व नगरीकरण के साथ साथ आवश्यकताओं के अनुरूप अनेक अविष्कार व परिवर्तन हुए है, जो मानव की सृजनात्मक शक्ति के परिचायक है। नवीन परिस्थितियों का सामना तभी किया जा सकता है जब व्यक्ति मे सृजनशीलता की प्रतिभा को विकसित किया जाए। सृजनात्मक व्यक्तित्व व्यक्तित्व का एक लक्षण न होकर लक्षणों का समूह है जिसे क्रियेटिविटी/सिन्ड्रोम कहते है। इन लक्षणों का समूह है साहसी कार्यों की प्रवृति, जिज्ञासा आत्मविश्वास बौद्धिक स्थिरता

Principal
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

A Study Of Effect Of Peer Pressure On Obedience/Disobedience Behavior Of Adolescents

Dr. Shipra Gupta

(Reader)

Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

Abstract

Adolescent is age in which everyone feels more peer pressure. Peer pressure is the pressure feel by someone of the same age group. After the age of six every child starts to behave like his/ her peers.

Peer pressure may be positive like strengthen good habit etc. and may be negative like smoking etc. students' obedience /disobedience behavior also affect by peer pressure. To study that effect investigator take this topic. For this descriptive survey method was done. A sample of 120 students was taken from Jaipur, Rajasthan. A self constructed tool 'peer pressure scale' will constructed by the researcher herself and Obedient-disobedient tendency scales by C.S. Mehta and N. Husnain (1984) was used for data collection. Result from this study reveals that there is significant difference on the bases of boards means CBSE student feel more peer pressure then RBSE students. On the other hand there no significant difference on the bases of gender. Investigator also despite that there is negative correlation between peer pressure and obedience/disobedience behavior of adolescents.

Introduction

Behavior is a way in which an individual or a group acts relating to community, state, or national affairs. Behavior of an organism is entirely based upon his or her previous experiences, either they were satisfying or annoying. Behavior elicited also depends upon the types of rearing, parents, school, and community, an organism got in his/her life time. These standards are the products of the formative experiences and pressures from the groups around them. Adolescence is the most important period of human life. Poets have described it as the spring of life and an important era in the total life span. The word "adolescence" came from a Greek word "adolescere", which means to grow to maturity. But as we discussed before getting maturity he/she is under the influence of his/her peer. This is also affecting his /her behavior .A child under the pressure and when peer is good the behavior of child is also good. A Comparative Study on Obedient/Disobedient Behavior by Sharma shows that males are disobedient in their behavior due to peer

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बच्चों की निषुल्क व अनिवार्य षिक्षा के प्रति अभिभावकों व षिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

पर्यवेक्षक प्रस्तुतकर्त्री

डॉ. षिप्रा गुप्ता अन्जली चौहान

रीडर एम.एड (छात्रा)

सारांष :– षिक्षा प्रकाष का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्षन करती है, इससे बुद्धि, विवेक तथा निपुणता में वृद्धि होती है, षिक्षा मनुष्य का तीसरा नेत्र है, षिक्षा के महत्व को देखते हुए वर्ष 2009 में पारित (निःषुल्क एवं अनिवार्य षिक्षा का अधिकार अधिनियम) में 6 वर्ष से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःषुल्क व अनिवार्य षिक्षा की बात की गयी है, निःषुल्क व अनिवार्य षिक्षा की सहायता से बालक बालिका को समान रूप से षिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे, इससे हमारा देष षिक्षित और विकसित बनेगा, इस योजना की सहायता से षिक्षा की नींव को मजबूत किया जा सकेगा।

मुख्य षब्द : निःषुल्क षिक्षा, अनिवार्य षिक्षा, षिक्षक, अभिभावक, अभिवृत्ति आदि।

1. प्रस्तावना : हमारा संविधान विकास के समान अवसर की गारण्टी देता है, अतः यह सरकार का उत्तरदायित्व है कि आजीविका की दौड में राष्ट्रके सभी बच्चों को चाहे व धनी परिवार के हा या निर्धन परिवार के समान अवसर दिए जाएं। स्वतंत्रता के बाद प्राथमिक षिक्षा के विस्तार के लिए सरकार द्वारा किये गये प्रयास प्रषंसनीय है, इसी क्रम में निःषुल्क

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका
डा. शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्ता
कल्पना शर्मा
(एम.एड.छात्रा)

सारांश –

सोशल मीडिया की परिभाषा मे कहा गया है कि यह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोग का एक ऐसा समूह है प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान प्रदान की अनुमति देता है । इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते है, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते है। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संचार मे महत्वपूर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। 2000 के दशक के शुरू मे सॉफ्टवेयर विकास कर्त्ताओं ने अंतिम इस्तेमाल कर्त्ताओं को इस बात मे सक्षम बनाया कि वे वर्ल्डवाइड वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सकें, ऑनलाइन या वास्तविक समुदायो मे प्रयोक्ता–जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप मे हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अदभुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम "सोशल मीडिया" कहते है।

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटो जैसे– फेसबुक, ट्विटर, लिंकर ,यू–ट्यूब, लिंक्डइन, माइस्पेस, साइंडक्लाउड और ऐसे अन्य साइटो पर इस्तेमाल कर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट इमेज, ऑडियो और विडियो रूपों मे जानकारी मे हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की योग्यता और सुविधा प्रदान करता है। यह सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शों को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को जन्म दिया है जो घात लगाए रहते है और लगता है कि उनकी संख्या बढ़ रही है। हाथ मे रखे जाने वाले मोबाइल उपकरणों जैसे–स्मार्टफोन और टेबलेट्स की

PRINCIPAL
BHAWANI GR... COLLEGE
SEC-3, VIDH... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विज्ञान संकाय के शिक्षकों के व्यक्तित्व का विद्यार्थियों की रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. शिप्रा गुप्ता
रीडर

प्रस्तुतकर्त्री
अपूर्वा शर्मा
एम.एड.छात्रा

सारांश –

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है आकर्षण व्यक्तित्व वाले अध्यापक को छात्रो द्वारा पसंद किया जाता है। शिक्षक के व्यक्तित्व मे शिक्षण का तरीका, अन्त–क्रिया आदि बाते सम्मिलित होती है। अध्यापक कक्षा–कक्ष का वातावरण रूचिकर बना सकता है रूचि वह वस्तु होती है जो किसी भी व्यक्ति को भविष्य मे आगे बढ़ने की राह दिखाती है तो उसे यह आसानी से समझ आ जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ो के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे जयपुर जिले के राजकीय व निजी माध्यमिक स्तर के 20 विज्ञान शिक्षक व 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि विज्ञान विषय के शिक्षको के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन मे सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना –

वर्तमान मे 21वी शताब्दी मे समाज का विकास औद्योगिक व विज्ञान के कारण हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता विज्ञान की उपलब्धियो व आविष्कार पर आधारित है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विज्ञान जीवन का मूल आधार बन चुका है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे प्रगति एवं–उन्नति शिक्षा के माध्यम से ही हो सकती है। विद्यालय भावी राष्ट्र का निर्माण स्थल है, जहाँ राष्ट्र की भावी पीढ़ी को जीवन के सभी क्षेत्रो मे संघर्षरत रहकर कार्य करते रहने की शिक्षा दी जाती है। एक अच्छे सुसंस्कृत और विकसित राष्ट्र का निर्माण विद्यालयो की कक्षा मे होता है, जिसके निर्माणकर्त्ता अध्यापक ही होते है। माना जा सकता है कि शिक्षा के विकास मे अध्यापक भी एक अच्छी भूमिका निभा सकता है।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण मे बहुत सारे गुणो का समावेश होना आवश्यक है एक सफल शिक्षक के लिए एक अच्छे व्यक्तित्व का होना

PRINCIPAL
BIYANI G... COLLEGE
SEC-3, VIDH... JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे ं व्यक्तित्व मूल्यो ं की विवेचना

निर्देशिका प्रस्तुतकर्त्री डॉ. शिप्रा गुप्ता सरोज जाखड़ रीडर

एम.एड.छात्रा

सारांश – कक्षा एक छोटा सा समाज होता है जहाँ सभी प्रकार के बच्चे होते है। बुद्धिमान, सुस्त, भावात्मक बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, मानसिक रूप से अवरूद्ध शारीरिक रूप से अशक्त धीमा करने वाले आदि। यदि हम एक प्रकार का दृष्टिकोण अपनाए तो कक्षा का एक बड़ा भाग वंचित रह जाता है और बाद मे ं पिछड़ जाता है। आजकल अध्यापक समावेशन के मूल्यों को पूरी तरह से समझते है क्योकि उन्हे ं एक प्रभावी शिक्षा प्रथा के रूप मे ं इसकी शक्ति का अंदाजा है। समावेशित शिक्षा सभी के लिए एक मानव अधिकार का मुद्दा है, यह एक अच्छी शिक्षा है। इससे एक अच्छी

सामाजिक भावना पैदा होती है। अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों मे ं समावेशित शिक्षा के संप्रत्यय को सम्मिलित किया जाए जिससे भावी अध्यापको ं के दृष्टिकोण अभिवृति, मूल्य और उनके व्यक्तित्व मे ं इस शिक्षा के प्रति सकारात्मक विचार उत्पन्न हो सके। प्रस्तुत अध्ययन मे ं शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे ं जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियो ं का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे व्यक्तित्व मूल्यों पाये जाते है। प्रस्तावना – मूल्य शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति क्षमताओं, दृष्टिकोण मूल्यों के साथ-साथ उस समाज के आधार पर सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार के अन्य रूपो ं को विकसित करता है।

शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक पहलुओ ं में अपने व्यकितत्व विकास के लिए दृष्टिकोण सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है यह छात्रो ं को उनके भविष्य को आकार देने के लिए एक सकारात्मक दिशा प्रदान करता है जिससे उन्हे ं अधिक जिम्मेदार बनाने मे ं मदद मिलती है। माता–पिता के बाद गुरू को ही सबसे ऊपर माना गया है। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी के समान होता है। शिक्षक उसे ं जैसा ढालेंगे

PRINCIPAL
BIYANI GIR... COLLEGE
SEC-3, VIDHYA... NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षागत वातावरण का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिप्रा गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड
कॉलेज, जयपुर

नलिनी शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड
कॉलेज, जयपुर

मुख्य शब्द – माध्यमिक अवस्था, शिक्षागत वातावरण, सर्वांगीण विकास आदि

सारांश

शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास एक निश्चित वातावरण में होता है। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त शिक्षागत वातावरण नही मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा शिक्षागत वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियाँ विकसित होती है। जन्मजात शक्तियाँ यदि शिक्षा का आधार है तो वातावरण शिक्षा का माध्यम, खाद एवं जलवायु है। और फल है, बालक का सर्वांगीण विकास। बालक का जब सर्वांगीण विकास हो जाता है तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करता है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। तथा निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय एवं निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर शिक्षागत वातावरण का प्रभाव, छात्रों को प्राप्त भौतिक सामग्री, अर्न्तवैयक्तिक विश्वास के आधार पर उच्चकोटि, मध्यम कोटि, निम्न कोटि का पाया गया।

पृष्ठभूमि तथा तर्काधार

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। गिजुभाई बधेका के अनुसार – "शिक्षा में गुणवत्ता होनी चाहिए।" यह बात आज बार–बार दोहराई जा रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा है जो हर बच्चे के काम आये। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सर्वांगीण विकास में समान रूप से उपयोगी हो। बेहतर शिक्षा हर बच्चे की वैयक्तिक विभिन्नता का ध्यान रखती है। यह हर बच्चे को विभिन्न गतिविधियों, खेल और प्रोजेक्ट वर्क के माध्यम से सीखने का मौका देने वाली भी होती है।'

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान तथा कला वर्ग विषय के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव सम्बन्धित धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative study of gender discrimination perceptions of students of biology and arts subject at higher secondry level

निर्देशिका
डॉ. आरती गुप्ता
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री
हितेश शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

❖ **शोध सार–**

मनुष्य ने जिस प्रकार अपनी सुरक्षा के लिए "सामाजिक संविदा की, उसी प्रकार अपने उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों के विभाजन भी परस्पर सहमति से कर दिया। तब न कोई प्रधान था, न कोई अप्रधान और जैसा कि प्रकृति ने बनाया भी था, दोनों ही परस्पर पूरक थे। पुरूष ने धीरे–धीरे अर्थोपार्जन का कार्य करने के कारण अपनी अघोषित श्रेष्ठता की स्थापना कर दी और स्त्री ने उसे चुपचाप स्वीकार भी कर लिया। स्त्री की मौन सहमति ने पुरूष को उनकी प्रधानता के भ्रम को दिनों–दिन स्त्रियों पर भाँति–भाँति की रोकथाम लगायी जाने लगी और यह कार्य इतने समय से निरन्तर किया जाता रहा है कि स्त्रियाँ आज स्वयं भी इस मनोविज्ञान से ग्रस्त हो गयी है कि पुरूष उनसे श्रेष्ठ है और वे पुरूषों की अपेक्षा प्रत्येक क्षेत्र में कम है। इसी कारण से आज जब कोई स्त्री घर से बाहर निकलती है तो उसके साथ 5 या 10 वर्ष के ही बालक को उसकी सुरक्षा के ही भले घर वाले भेज दें क्योंकि पर श्रेष्ठ पुरूष की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। लिंगीय भेदभाव और रूढ़िबद्धता का लिंगीय पहचान पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका निरूपण यह शोध प्रस्तुत करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर पर जीवविज्ञान तथा कला वर्ग विषय के विद्यार्थियों के लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए इस समस्या का चयन किया है। जिससे यह ज्ञात हो सके कि दो अलग–अलग विषय के विद्यार्थियों पर लैंगिक भेदभाव का कितना सकारात्मक तथा कितना नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

❖ **मूलशब्द :–** लैंगिक असमानता/भेदभाव, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र, प्रजनन, बच्चों का सामाजीकरण, विद्यालय।

❖ **प्रस्तावना –**

विद्याविहीन नरः पशु समानः

अर्थात विद्या के अभाव में मनुष्य पशु के समान है। मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ पाश्विक प्रवृतियाँ लेकर इस असहाय विश्व में जन्म लेता है। शिक्षा के माध्यम से ही उन पाश्विक प्रवृतियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण होता है और वह मनुष्य बनता है।

शिक्षा सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है तथा सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली यंत्र माना जाता है। शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके मुक्ति का मार्ग दिखाती है। शिक्षा एक सभ्य समाज का आधार मानी जाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश फैलता है। साथ ही हमारी समस्याओं को सुलझा कर हमारे ज्ञान में विकास करती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास कर उन्हें पूर्णता प्रदान करती है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बालिका स्वास्थ्य व षिक्षा से संबंधित योजनाओं के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. आरती गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तुतकर्त्री

मोनिका शेखावत

एम.एड.छात्रा

सारांश –

सरकार ने बालिका व महिला स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हेतु निदेशालय महिला अधिकारिता एवम् बाल विकास विभाग के संयुक्त तत्वाधान मे 19 नवम्बर 2021 को "उड़ान योजना" का शुभारम्भ किया जिससे बालिकाओं को प्रथम चरण मे राजकीय विद्यालयो एवं चयनित आंगनबाड़ी केन्द्रो पर सेनेटरी नेपकिन वितरण व आगामी चरण मे अन्य शिक्षण संस्थानों मे व अन्य आंगनबाड़ी केन्द्रो पर निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण किया जाएगा।

इसके अलावा मुख्यमंत्री द्वारा बालिकाओं के प्रति समाज मे सकारात्मक सोच विकसित करने एवम् उनके स्वास्थ्य तथा शैक्षणिक स्तर मे सुधार हेतु "मुख्यमंत्री राजश्री योजना" शुरू की। इस योजना के तहत 1 जून 2016 या उस के बाद जन्म लेने वाली बालिकाएँ लाभ की पात्र होगी।

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि बालिका स्वास्थ्य व शिक्षा से संबंधित योजनाओं के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे जागरूकता पाई जाती है।

प्रस्तावना –

"स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।"

"स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।"

उक्त पंक्तियाँ स्वास्थ्य की महता को परिलक्षित करती है जिस देश की जनसंख्या स्वस्थ होगी वह देश समूचे विश्व मे विकसित देशों की श्रेणी मे अग्रिम पंक्ति मे सम्मिलित होगा।

भारत युवा देष है जिसमे सबसे ज्यादा आबादी युवा है। 15–30 वर्ष की आयु के लोगों को

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विभिन्न सामाजिक कुरितियों के खिलाफ सरकार के द्वारा बनाई नितियों के प्रति बी.एड. प्रषिक्षार्णिथियों की जागरूकता

निर्देषिका

डॉ. आरती गुप्ता

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतीकर्ता

पायल सैनी

एम.एड.छात्रा

प्रस्तावना:–

महिला और पुरूष समाज के अभिन्न अंग है। दोनो समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये है। यदि एक पहिया कमजोर होगा तो गाड़ी रूक जाती है और सामाजिक संतुलन खतरे मे पड सकता है। ऐसे मे समतामूलक समाज की स्थापना का प्रयास अधुरा रह सकता है। कन्या बचाओ, महिला उत्पीड़न, जात–पात, भेदभाव सहित सामाजिक मुद्दो पर जिले के विभिन्न क्षेत्रो मे वर्ष 1999 से प्रयास कर लागे ो की संवेदनाओं को झकझोर कर समाज मे समता लाने के लिये ग्रामीणों को जागरूक करने का काम कर रहे है। वर्ष 2003 से भ्रूणहत्या और महिला उत्पीड़न के खिलाफ लागे ो को जागरूक करने के खिलाफ एक मुहिम छोडी। वर्ष 2010 मे संकल्प उठाओ बेटी बचाओ अभियान और महिला उत्पीड़न के खिलाफ जिले मे मुहिम चलाकर समाज मे फैली सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया।

षिक्षा मानव समाज को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करने के योग्य बनाती है। षिक्षा द्वारा ही बालक का सर्वागिण विकास होता है। वह अपना व्यक्तिगत जीवन सुखमय बनाता है। और सामाजिक जीवन मे अपने कर्तव्यो को पालन करते हुये राष्ट्र को विकास मे सहयोग देता है।

एक राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिको पर निर्भर है। जैसा कि सर्वविदित है कि आज का बालक देष का भावी नागरिक है। जिसे समाज ही पूर्ण रूप से तैयार करता है। इसलिये आवष्यक है कि हमारे भावी नागरिक योग्य कुषल एवं आदर्ष व्यक्तित्व लिये हो।

उद्यमिता क्षमताओं का विकास:–

नियमित आय से उनका आत्मविष्वास बढ़ा है और अब वे अपनी आय को बढ़ावा देने के अन्य रास्तो को तलाषना चाहती है। आन्ध्र प्रदेष मे भी एक ऐसे ही उब्ल्यूटीवी ने लगभग 350 ग्रामीण महिलाओं को प्रषिक्षित किया है और उन्हे हर्बल उत्पादों खाद्यान सामग्री और कॉस्मेटिक जैसे उत्पादो के बारे मे प्रषिक्षण दिया गया है।

महिला संषक्तीकरण:–

महिला सषक्तीकरण का अर्थ है कि महिलाओं की आध्यात्मिक राजनीतिक सामाजिक या आर्थिक शक्ति मे वृद्धि करना। सषक्तिकरण सम्भवतः निम्नलिखित या इसी प्रकार की क्षमताओं को मिलाकर है। स्वयं द्वारा निर्णय लने की शक्ति होना।

PRINCIPAL
JAYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-4, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन

निर्देशिका :
डॉ. आरती गुप्ता
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री :
गरिमा शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

(1) शोध सार :

आज जहाँ विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है, अब कुदरत को भी चुनौती दी जा रही है, हमारे वैज्ञानिक आए दिन नए नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं, ताकि मानव जाति का विकास हो सकें, लेकिन मानव जाति स्वयं ही अपनी प्रगति में बाधक बनी हुई है। आज यह दुःख की बात है कि एक ऐसा देश जहाँ विज्ञान इतना आगे बढ़ चुका है और अंतरिक्ष में सैटेलाइट तक भेजे जा रहे हैं, दूसरे ग्रहों पर जीवन खोजा जा रहा है, वहां इंसानों की बलि दी जाती है। लोक आज के वैज्ञानिक युग में डायन और टोना–टोटका जैसी बातों पर विश्वास करते हैं। अगर गाँव में कोई बीमार पड़ जाए तो, डॉक्टर के पास ले जाने से पहले तांत्रिक और ओझा के पास ले जाने को प्राथमिकता देते हैं। देश में अंधविश्वास निश्चित ही बढ़ रहा है और इसका सबसे बड़ा कारण डर है। पिछले कुछ महीनों से हम महामारी और कई अन्य परेशानियों का सामना कर रहे हैं, जिससे जनमानस में डर फैल गया है। इसका फायदा कुछ लोग उठा रहे हैं। वे अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं। तंत्र–मंत्र का आज कारोबार बनता नजर आ रहा है। "वशीकरण" नाम से कई ज्योतिष वेबसाइट चला रहे हैं। जहाँ खाते में पैसे डलवाए जाते हैं। फिर ई–मेल के जरिए अपॉइंटमेंट लिया जाता है। अंधविश्वास का बाजार तैयार हो रहा है। सम्पूर्ण भारत में अंधविश्वास ने अपनी जड़ें फैला रखी हैं।

समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करने के लिए–वैज्ञानिक सोच के साथ जनजागृति की जरूरत है। सामाजिक कुरीतियों, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, डायन–प्रथा आदि तथा सामाजिक समस्याओं जैसे बाल यौन–शोषण, बेरोजगारी आदि प्रतिजन मानव को जागरूकता के लिए कई कार्यक्रम किये जाते हैं। अतः शोधकर्त्री ने सामाजिक अंधविश्वास केप्रति जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा बी.एड. प्रशिक्षार्थियों पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु इस समस्या का चयन किया। इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि जागरूकता कार्यक्रम सामाजिक अध्ययन की समस्या को दूर करने में कितने प्रभावी सिद्ध हो सकते है।

(2) **शोध का शीर्षक :**

सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन।

(3) **पृष्ठभूमि** :

समाज और शिक्षा में अन्योन्याश्रित संबंध है। तथ्य यह है कि जैसा समाज होता है, वैसी ही उसकी शिक्षा होती है और जैसी किसी समाज की शिक्षा होती है, वैसा ही वह समाज बन जाता है। प्रत्येक समाज अपनी मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुकूल ही अपनी शिक्षा की व्यवस्था करता है और समाज की मान्यताएँ एवं आवश्यकताएँ उसकी भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। समाज में होने वाले परिवर्तन भी उसके स्वरूप एवं आवश्यकताओं को बदलते है और उनके अनुसार उसकी शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। आज का युग विज्ञान

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में निजता के अधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. आरती गुप्ता
बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)

1. सार :–

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर जिले में शहरी व ग्रामीण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में निजता के अधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। जिसमें शोध के न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक विधि से 300 विद्यार्थियों को चुना गया। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन व 'टी' मूल्य का प्रयोग किया गया। शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की निजता के अधिकार के प्रति जागरूकता का पता लगाया गया। इसके विभिन्न उद्देश्यों तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर शोध कार्य आगे बढ़ाया गया। शोध विश्लेषण के बाद यह पाया गया की जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की जागरूकता में अन्तर है। जयपुर जिले के शहरी विद्यार्थियों की जागरूकता ग्रामीण विद्यार्थियों की जागरूकता की तुलना में बेहतर है।

2. पृष्ठभूमि :–

निजता शब्द एक सामान्य शब्द है जिसके अन्तर्गत स्वतंत्रता की अवधारणा को शामिल करते हुए निजी सम्बन्धों व्यक्ति की स्वतंत्रता को मूल विकल्प स्वयं व परिवार की स्वतंत्रता व सुरक्षा को भी शामिल किया गया है।

निजता के अधिकार द्वारा कोई भी व्यक्ति के अकेले रहने पर रोक नहीं लगा सकता है। जैसे– सार्वजनिक रूप से फोटो न खिंचवाना, व्यक्तिगत जानकारी को अन्य व्यक्ति की पहुँच तक प्रतिबंधित करना किसी व्यक्ति की निजी संचार सेवा को सुनना या रिकार्ड करना निजता का उल्लघंन माना जाता है। निजता का अधिकार सीधे व सहजशब्दों में कहे तो जीने का अधिकार है। आधुनिक तकनीकी नवाचारों– कम्प्यूटर व इंटरनेट के माध्यम से साइबर दुनिया में कहीं भी अनिश्चित व्यक्तियों के बारे में व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तकनीकी में गोपनीयता दो धारी तलवार के समान है। वर्तमान में सभी लोकतांत्रिक देशों को यह अच्छे तरह से महसूस हो गया है कि निजता सभी मानवाधिकारों का केन्द्र है। निजता के अधिकार को लेकर

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"A Study Of Diagnostic And Remedial Teaching Of Difficulties In Reading & Writing Errors In English Language At Upper Primary Level

Ms. Purva Gautam[1]
Asst. Prof.
B.Ed. College,
Jaipur

Mr. Ravi Gautam[2]
Asst. Prof. Biyani Girls
Biyani Law College,
Jaipur

Abstract:

The researcher has done his research work and arrives at the conclusions on the basis of objectives and hypothesis that Upper Primary level students of 8th class performed an errors like reading and writing in teaching of English language. Errors in spelling, pronunciation in consonant sounds etc. The researcher has completed the research work and got the concluding remark for the study that there are some factors effect the language. The present study has its own importance in to improve the teaching learning activities among students in English language. Basically in this study the samples 60 had been drawn from various school to diagnose the errors and provide remedial instructions for reducing the errors in English language. In this study the researcher came to the conclusion that errors can be reduced with the help of good remedial teaching.

Keywords: Reading Error, Writing Error & Remedial Teaching.

- **Introduction:**

Research is a systematic work which is done by the researcher systematically. The procedure of the present research is based on difficulties of reading and writing errors in English language. Language is the whole expression of sound personality of an individual. Now, a day it is necessary to study language errors of an individual for developing scientific personality. The diagnostic test prepared on various aspects such as reading and writing errors of upper primary level students of 8th class. And accordingly provide remedial instructions for minimizing these errors. After data collection the researcher has done the analysis and interpretation of the results for the

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

A STUDY OF THE STUDENT'S PERCEPTION TOWARDS SECONDARY SCHOOL TEACHER'S CLASSROOM BEHAVIOR

श्रीमती पुष्पा कुमावत
सहायक प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1. षोध सार :–

प्रस्तुत षोध कार्य षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण के अध्ययन से सम्बन्धित है।इस षोध के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की षिक्षक–व्यवहार व षिक्षकों के प्रति अधिक अपेक्षाएं रहती है। वर्तमान षिक्षा–प्रणाली पूर्णतः बाल–केन्द्रित हो चुकी है जिसमे विद्यार्थी व अध्यापक के मध्य सकारात्मक सम्पर्क होने चाहिए इससे विद्यार्थियों मे आत्म–विश्वास व सौहार्द की भावना का विकास होगा।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किषोर वर्ग के होते है। जिनमें अवबोध का विकास होता है वे षिक्षकों के व्यवहार को अपने प्रत्यक्षण से देखते है। विद्यालय में षिक्षकों को उचित षिक्षण कौषल, सकारात्मक व्यवहार, विद्यार्थियों की समस्याओं का निर्देषन व मार्गदर्षन तथा षैक्षिक कार्यों का निष्पादन व क्रियान्वन सम्बन्धी कार्य करते है और इन्ही के प्रति विद्यार्थी अपने भिन्न–भिन्न प्रत्यक्षीकरण बना लेते है। षिक्षकों को छात्र–छात्रा दोनों के प्रति समान व्यवहार करना चाहिए ताकि विद्यार्थी उनके प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षण को विकसित कर सके। षोध निष्कर्षतः छात्र व छात्राओं का षिक्षकों के व्यवहार के प्रति समान व सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

2. षोध का षीर्षक :–

"माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन"

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड–19, भौगोलिक प्रभाव – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

वीरेंद्र कुमार
सहायक आचार्य
बियानी गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

सारांश– व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है सामान्य रूप से तथ्यों तथा सिद्धांतों की जानकारी ही ज्ञान का आधार होती है। जिज्ञासा, कौतूहल, चिंतन परिश्रम मनन आदि ज्ञान के भंडार को बढ़ाने में व्यक्ति की सहायता करते हैं इसी क्रम में भूगोल की बात करें तो इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान किया जाता है भूगोल शब्द का अर्थ सामान्यतः पृथ्वी का अध्ययन माना जाता है आधुनिक भूगोल मानव प्रेम सौहार्द तथा विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित ही नहीं वरन अंगीकृत करते हुए मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने और प्रस्फुटित करने की दिशा में प्रेरित करता है वर्तमान कोविड–19 महामारी के दौरान संपूर्ण विश्व में विभिन्न भौगोलिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोध पत्र के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है कोविड–19 महामारी के दौरान सरकार के द्वारा लिए गए लॉकडाउन निर्णय से दिखाई दिए गए विभिन्न वातावरणीय प्रभाव जिनके अंतर्गत वातावरण का स्वच्छ हो जाना नदियों का स्वच्छ हो जाना तथा जीव जंतुओं का स्वतंत्र व निर्भीक रूप से विचरण करना तथा सामान्य जनजीवन पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव दृष्टिगत हुए लॉकडाउन के अंतर्गत हुए आकस्मिक परिवर्तन संपूर्ण मानव जाति को भविष्य में प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाते हुए विकास की ओर अग्रसर होने की शिक्षा प्रदान करता है आज जहां मनुष्य अपनी बुद्धि एवं कौशल के आधार पर विकास के चरम स्तर पर पहुंच चुका है किंतु प्रकृति के साथ के बिना वह आज भी अधूरा है अतः हमें भविष्य में अपने स्वार्थ की भावना को त्याग कर प्रकृति प्रेम व सौहार्द की भावना को विकसित कर संपूर्ण मानवीय समाज के हित को ध्यान में रखते हुए प्रकृति के नियमों की पालना सदैव करनी होगी।

मूल शोध पत्र

व्यक्ति अपनी बुद्धि तथा अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है सामान्य रूप से तथ्यों तथा सिद्धांतों की जानकारी ही ज्ञान का आधार होती है। जिज्ञासा, कौतूहल, चिंतन परिश्रम मनन आदि ज्ञान के भंडार को बढ़ाने में व्यक्ति की सहायता करते हैं व्यक्ति के पास ज्ञान की मात्रा ज्यों–ज्यों बढ़ती जाती है, उसकी और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की ललक भी बढ़ती है, इसी ललक में वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए सुनियोजित तथा व्यवस्थित प्रयास करता है, यह प्रयास ही अनुसंधान का रूप धारण करते हैं अनुसंधान करने से जो परिणाम तथा निष्कर्ष निकलते हैं पुनः व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करते हैं इस प्रकार ज्ञान तथा अनुसंधान कि यह श्रृंखला अनवरत चलती रहती है।

इसी क्रम में भूगोल की बात करें तो इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान किया जाता है भूगोल शब्द का अर्थ सामान्यतः पृथ्वी का अध्ययन माना जाता है। आधुनिक भूगोल मानव प्रेम सौहार्द तथा विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित ही नहीं, वरन अंगीकृत करते हुए मानवीय मूल्यों को संरक्षित करने और प्रस्फुटित करने की दिशा में प्रेरित करता है प्राकृतिक वातावरण तथा मानव जीवन में परस्पर क्या संबंध है तथा इन दोनों में क्या तथा कैसी क्रियाएं प्रतिक्रियाएं हुई है, इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस विषय का अध्ययन कई रूपों में होता है। पृथ्वी के धरातल पर कुछ घटनाएं होती है जो मनुष्य के धरातल पर रहने से होती है इसमें भौगोलिक परिस्थितियों के उस प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है, जो मनुष्य के रहन–सहन स्वभाव तथा मानसिक एवं शारीरिक अवस्था पर पड़ता है इसका क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है पृथ्वी धरातल प्रकृति पर घटना अवश्य घटित होती है चाहे मनुष्य उस पर रहे चाहे ना रहे इन घटनाओं का अध्ययन प्राकृतिक भूगोल का क्षेत्र है जिन उद्देश्यों को लेकर हम भूगोल में अनुसंधान करते हैं वह निम्न प्रकार है–

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"युवाओं के व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका का अध्ययन"

सरिता पारीक

सहायक प्रोफेसर

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सरिता शर्मा

सहायक प्रोफेसर

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

- **प्रस्तावना**

योग वह व्यवस्थित चैतन्य प्रक्रिया है। जिससे मनुष्य के विकास बहुत कम समय में पूरी की जा सकती है।

श्री अरविन्दों शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तरों पर बहुमुखी व्यक्तित्व के विकास पर जोर देते है। योग किसी व्यक्ति की उसके विकास को पूर्णता तक पहुचाने की एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, इस विकास से व्यक्ति चेतना के उच्च स्तर पर जीना सीख जाता है। इस प्रकार योग के बहुमुखी विकास और वृद्धि तथा मानसिक संवर्धन की कुंजी है।

पंतजलि के अनुसार योग मन को नियंत्रित करने की प्रक्रिया है। नियंत्रण में दो पहलू होते है–किसी वांछित विषय अथवा वस्तु पर ध्यान को एकाग्र करने की शक्ति और लम्बे समय तक शांत रखने की क्षमता।

Principal
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"कक्षा 9की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में अन्तर्निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन।"

सोनू शेखावत

सहायक प्रोफेसर

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1. पृष्ठभूमि :–

शिक्षा एक महत्वपूर्ण व सर्वव्यापी विषय है। शिक्षा मानव जाति के विकास के लिए एक जैविक आवश्यकता तो है ही , साथ एक अनिवार्यता भी है। महान दार्शनिक अरस्तु के अनुसार यदि शिक्षा के द्वारा हमारे अंदर सेवाभाव, नम्रता, सरलता और आत्मविकास का गुण विकसित नहीं हो पाया तो ऐसी शिक्षा व्यर्थ मानी जा सकती है। शिक्षा के विकास व समाज के साथ सामंजस्य हेतु विधालयी विषयों में संकायो को निर्माण किया गया है। एन.सी.एफ (2005) द्वारा दिये गये विज्ञान शिक्षण के आधार पत्र द्वारा मानव के नये–नये अविष्कारों व सैद्धान्तिक ढाँचे को विकसित करने की ओर अग्रसर होना ही विज्ञान माना गया है।

विज्ञान गयात्मक और निरन्तर परिवर्तित ज्ञान का भण्डार जिसमें अदभूत नये–नये क्षेत्रों को शामिल किया जाता है।

वर्तमान समय मे विज्ञान शिक्षण को मूल्यपरक बनाने की आवश्यकता है क्योंकि विज्ञान शिक्षण में तथ्यों की जानकारी पर ही बल दिया जाता है मूल्यों पर नहीं। अतः वर्तमान भारत का अस्तित्व मूल्य परक शिक्षा में निहित है। एन.सी.ई.आर.टी व सी.बी.एस.ई वैल्यू हैण्डबुक के अनुसार 83 मूल्यों को पाठ्यचर्या मे वर्गीकृत किया है जिसमें से 45 मूल्यों को विज्ञान विषय में शामिल किया गया है।

3. शोध उद्देश्य

कक्षा 9 की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक में अन्तर्निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

4. शोध प्रविधियाँ :–

4.1 विधि :–प्रस्तुत शोध में कक्षा 9 की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक के मूल्यों के सन्दर्भ मे समीक्षात्मक अध्ययन हेतु विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया ।

4.2न्यादर्श :–प्रस्तुत शोध मेंन्यादर्श के रूप में कक्षा 9 की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक को सौदेश्य न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया।

4.3 प्रदत्त संग्रयन :–प्रस्तुत शोध मेंविषयवस्तु विश्लेषण हेतु प्रदत्तों को संग्रयन आवृति के रूप में किया गया जिसके माध्यम से विज्ञान विषय में मूल्यों (वैज्ञानिक,सामाजिक,नैतिक,सांस्कृतिक को प्रस्तुत किया गया।)

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"NIOS में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में दूरस्थ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।"

"STUDY OF THE ATTITUDE OF DISTANCE EDUCATION IN HIGHER SECONDARY LEVEL STUDENT STUDYING IN NIOS**

श्रीमती तृप्ति सैनी
सहायक प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1. सार :–

प्रस्तुत षोध कार्य एन.आई.ओ.एस में अध्ययनरत विद्यार्थियो मे दूरस्थ षिक्षा के प्रति अभिवृति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया। वर्तमान समय मे षिक्षा की अवधारणा बहुत व्यापक हो गई है। यद्यपि अतीत में भी षिक्षा व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवष्यकता के रूप में निर्विवाद रही है। परन्तु अब व्यक्ति एवं समाज के विकास की एक, अनिवार्यता बन गई है। 'सबके लिए षिक्षा' की अवधारणा अब सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इसिलिए विद्यार्थी दूरस्थ षिक्षा से भी षिक्षा ग्रहण कर रहे है। क्योंकि षिक्षार्थियों को अब षिक्षा के विभिन्न साधनों एवं प्रणालियों को अपनी सुविधानुसार चुनने की स्वतंत्रता प्रदान की जा रही है। जिससे विद्यार्थी कही पर भी बैठकर भी षिक्षा प्राप्त कर सकता है। इसलिए विद्यार्थियों में दूरस्थ षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। जिससे षोध के न्यादर्ष का चुनाव सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया एवं आंकड़ो के एकत्रीकरण करने के लिए स्वनिर्मित अभिवृति मापनी का निर्माण किया। आंकड़ो के विष्लेषण के लिए प्रतिषत सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया एवं इसके विभिन्न उदेष्यों तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर षोधकार्य को आगे बढाया गया। प्रतिषत सांख्यिकी से विष्लेषण व्याख्या के बाद यह निष्कर्ष निकला कि एन.आई.ओ.एस मे उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी दूरस्थ षिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमती तृप्ती सैनी गुड़िया मेघवाल (असिस्टेंट प्रोफेसर) (एम.एड. छात्रा)

1- सारांश– किसी भी राष्ट्र का विकास करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति साहित्य ने पर्यावरण शिक्षा की जड़ें अधिक प्राचीन है। उपनिषदों में भी मानव एवं प्रकृति की पारस्परिक निर्भरता का उल्लख। मिलता है। वर्तमान में भोगवादी सभ्यता ने विकास का जो रूप प्रस्तुत किया है, उसी में पर्यावरण के विनाश के बीज छिपे है। हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का संरक्षण करने वाली तकनीकी अपनानी होगी। इसके लिए हमें वर्तमान शिक्षा के माध्यम से छात्रों में आवश्यक सचू ना के हस्तान्तरण के साथ ही उचित दृष्टिकोण एवं कौशलों का विकास करना है। पर्यावरण की शिक्षा का मकसद पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा करना ही नही है, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कार्यवाही करना भी है। स्वस्थ पर्यावरणा ही मानव जीवन का आधार है, पर्यावरण की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना असम्भव है। फलस्वरूप आज विश्व में पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ गया है, जिसको भारत के सभी विद्यालयों में विषय के रूप में मान्यता दे दी। पर्यावरण शिक्षा तब तक प्रभावी नही हो सकती, जब तक इसके लिए प्रभावी व्यूह की रचना ना की जा सके। इसके लिए हमें लोगों को जागरूक करना होगा, जैसे खेलकूद, नाटक, पर्यावरण चेतना रैली, वृक्षारोपण आदि आयाम या कार्यक्रम पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने में सहायक होंगे।

2- प्रस्तावना– औद्योगिक विकास की होड़ में मनुष्य ने जाने अनजाने में प्रकृति की संवेदनशीलता को चुनौती दी है, मनुष्य ने प्रकृति के नियमों की अवहेलना की है। भारतीय संस्कृति के प्रमुख स्त्रोतों से स्पष्ट है कि सभ्यता के आदिकाल से ही इस

भारत भूमि में प्रकृति के विविध प्रमुख अंगों को देवत्व की संज्ञा दी गई है। सम्भवतः इसका प्रधान कारण यह रहा है कि हमारे पूर्वज पर्यावरण की शुद्धता और महत्व को अच्छी तरह समझते थे, उनका विश्वास था कि पर्यावरण के संरक्षण से ही पूरी सृष्टि हरी भरी और पुष्ट

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका
श्रीमती तृप्ति सैनी
व्याख्याता

प्रस्तुतकर्त्री
अर्चना चौधरी
एम.एड.छात्रा

सारांश –

बालक पत्रिकाओं का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों मे भाषागत व रचनात्मकता का प्रभाव पड़ता है। छात्र व छात्राओं में रोचकता व भाषागत अध्ययन मे कुछ खास अंतर नही है। परन्तु रचनात्मकता में छात्राओं को अधिक रूचि है। यही रूचि छात्रों को भी हो इसके लिए उन्हे प्रेरित किया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि समय–समय पर बच्चों की बाल पत्रिकाओं को पढ़ने व उससे कुछ नया सीखने को अभिप्रेरित अध्यापक व अभिभावक दोनों को ध्यानपूर्वक करवाना चाहिए तथा बाल भास्कर की विषय सामग्री की ओर अधिक रूचिकर करे जिससे विद्यार्थियों को उसके पढ़ने मे रूचि बनी रहे।

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे जयपुर शहर के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है इसके साथ ही 2 समाचार बाल पत्रिकाओं का भी चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों मे संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव के अध्ययन मे सार्थक अंतर पाया गया है।

प्रस्तावना –

आधुनिक युग मे निरन्तर नई–नई घटनायें घटती रहती है और बड़ी तेजी से घटती है। सूचनाएं आधुनिक मनुष्य के लिए ज्ञान का स्त्रोत ही नही शक्ति का ही स्त्रोत है। इसलिए अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं की सूचना प्राप्त करना आधुनिक मनुष्य की एक अनिवार्य जरूरत बन गई है। ऐसी स्थिति मे जनसंचार का अत्यधिक महत्व है। जन संचार शब्द जन+संचार शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है – जनता तक संदेश या सूचना पहुँचाना। सम्प्रेषण की सम्पूर्ण प्रक्रिया जनसंचार है, जिसके द्वारा मानव अपने विचारों और मंतव्यों का आदान–प्रदान करता है मनुष्य के विकास के साथ–साथ जनसंचार माध्यमों का भी विकास हुआ। जनसंचार माध्यमों का दो भागों परम्परागत व आधुनिक माध्यम मे बांटा जाता है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC.3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मेक इन इंडिया योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका
श्रीमती तृप्ति
असिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तुतकर्त्री
पारूल
एम.एड.छात्रा

सारांश –

मेक इन इंडिया का मकसद देश को मैन्युफैक्चरिंग का हब बनाना है। घरेलू और विदेशी दोनों निवेशकों को मूल रूप से एक अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने का वायदा किया गया है ताकि 125 करोड़ की आबादी वाले मजबूत भारत को एक विनिर्माण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करके रोजगार के अवसर पैदा हों। इससे एक गंभीर व्यापार में व्यापक प्रभाव पड़ेगा और इसमें किसी नवाचार के लिए आवश्यक दो निहित तत्वों नये मार्ग या अवसरों का दोहन और सही संतुलन रखने के लिए चुनौतियों का सामना करना शामिल है। राजनीतिक नेतृत्व के व्यापक रूप से लोकप्रिय होने की उम्मीद है लेकिन 'मेक इन इंडिया' पहल वास्तव में आर्थिक विवके, प्रशासनिक सुधार के न्यायसंगत मिश्रण के रूप में देखी जाती है। इस प्रकार यह पहल जनता जनादेश के आहवान – "एक आकांक्षी भारत" का समर्थन करती है।"

प्रस्तावना –

मेक इन इंडिया भारत सरकार द्वारा 25 सितम्बर 2014 को देशी और विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में ही वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए बनाया गया है। अर्थव्यवस्था के विकास की रफ्तार बढ़ाने, औद्योगीकरण और उद्यमिता को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन करने के लिए भारत का निर्यात उसके आयात से कम होता है। बस इसी ट्रेंड को बदलने के लिए सरकार ने वस्तुओं और सेवाओं को देश में ही बनाने की मुहिम को शुरू करने के लिए मेक इन इंडिया यानी "भातर में बनाओ" योजना का प्रारम्भ की थी।

इसके माध्यम से सरकार भारत में अधिक पूँजी और तकनीकी निवेश पाना चाहती है। इस परियोजना के शुरू होने के बाद सरकार ने कई क्षेत्रों में लगी धन ,ध्वतमपहद कपतमबज प्दअमेजउमदज की सीमा को बढ़ा दिया है, लेकिन सामरिक महत्व के क्षेत्रों जैसे अंतरिक्ष में 74 प्रतिशत, रक्षा – 49

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS ... COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं निजी विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक लब्धि (ष्फ) का अध्ययन

डॉ. प्रज्ञा श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर,

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

सारांष

प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक लब्धि का स्तर क्या है। न्यादर्ष हेतु जयपुर षहर के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्रायें) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया है। किषोरों की सामाजिक लब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित सामाजिक लब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विष्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। परिणाम दर्षाते है कि सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं, निजी विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

षिक्षा वर्तमान षताब्दी की वह सबसे महत्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया है जो व्यक्ति तथा समाज के जीवन को विभिन्न रूपों में प्रभावित करती है। षिक्षा ने आज औद्योगिक विकास, आर्थिक संरचना, राजनैतिक जीवन, सामाजिकपूर्ण निर्माण और व्यक्तित्व के विकास को एक दूसरे से सम्बन्धित कर दिया है। यही कारण है कि आधुनिक समाज में षिक्षा को सामाजिक नियंत्रक के एक महत्वपूर्ण अभिकरण के रूप से देखा जाता है।

आज के युग में हम बालकों को वह षिक्षा नहीं दे पा रहे है जिसकी वह हकदार है। स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि हमें वह षिक्षा देनी चाहिए जिससे व्यक्ति चरित्रवान बनता है और उसकी प्रतिभा व मन की षक्ति का विस्तार होता है। सामाजिक लब्धि को आधार बनाकर ही भविष्य की षिक्षा का सही स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। वर्तमान षिक्षा के भीतर सामाजिक संस्कारों को पैदा करने वाली षक्तियों की आवष्यकता हमेषा से महसूस की गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाने

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के विद्यालयी षिक्षकों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

नीरज माथावत
(एम.ए एम.एड)
(Assistant Professor)
(बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर)

❖ पृष्ठभूमि

अच्छाई से पहले स्वच्छता का स्थान है। जीवन जीना एक कला है। प्रत्येक प्राणी जीवन को अपने ढंग से जीना चाहता है और उसके अनुरूप ही साधन जुटाने का प्रयत्न करता है। जन्म धारण करने के बाद जब तक प्राणी संसार में जीवित रहता है तब तक वह अपने जीवन को पर्यावरण के अनुसार समायोजित करने का प्रयत्न करता रहता है।

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में स्वच्छता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जहाँ स्वच्छता रहती है वहाँ ईष्वरीय कृपा विद्यमान रहती है ऐसा शास्त्रों में विदित है।

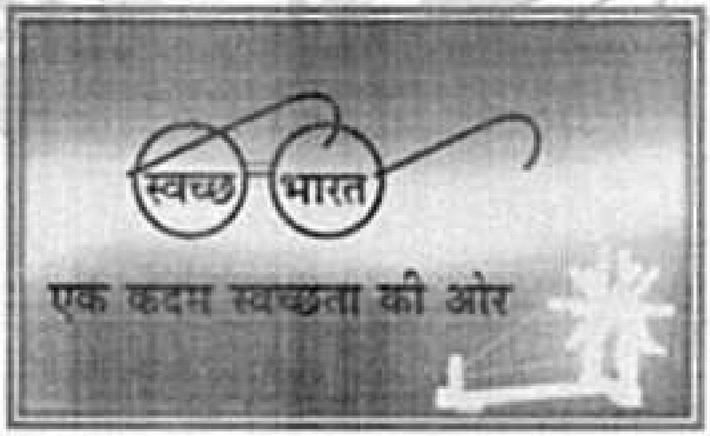

भारत विष्व के मानचित्र पर वह देष है जिसकी संस्कृति अखण्डित, अद्भुत है। अपनी विषिष्ट पहचान रखता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब भी भारत के सन्दर्भ में स्वच्छता का जिक्र किया जाता है तो इस स्वर्ग से भी सुन्दर धरा पर गन्दगी के पहाड़ नजर आते है। स्वच्छता एवं साफ–सफाई के प्रति जागरूकता सृजित कर देष को साफ–सुथरा व गंदगी से मुक्त बनाने के लिए राष्ट्रव्यापी स्वच्छ भारत अभियान का औपचारिक शुभारम्भ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2014 को गांधी

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षागत-व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

A STUDY OF THE STUDENT'S PERCEPTION TOWARDS SECONDARY SCHOOL TEACHER'S CLASSROOM BEHAVIOR

सरीता खेतान

अस्सिटेंट प्रोफेसर

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

शोध सार :- प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षकों के कक्षागत-व्यवहार के प्रति छात्र-छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण के अध्ययन से सम्बन्धि है। इस शोध के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के बालक-बालिकाओं की शिक्षक-व्यवहार व शिक्षकों के प्रति अधिक-अपेक्षाएं रहती है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली पूर्णतः बाल-केन्द्रित हो चुकी है जिसमे विद्यार्थी व अध्यापक के मध्य सकारात्मक सम्पर्क होने चाहिए इससे विद्यार्थियों मे

आत्म-विश्वास व सौहार्द की भावना का विकास होगा।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोर वर्ग के होते है। जिनमे अवबोध का विकास होता है वे शिक्षकों के व्यवहार को अपने प्रत्यक्षण से देखते है। विद्यालय में शिक्षकों को उचित शिक्षण कौशल, सकारात्मक व्यवहार, विद्यार्थियों की समस्याओं का निर्देशन व मार्गदर्शन तथा शैक्षिक कार्यों का निष्पादन व क्रियान्वन सम्बन्धी कार्य करते है और इन्ही के प्रति विद्यार्थी अपने भिन्न-भिन्न प्रत्यक्षीकरण बना लेते है। शिक्षकों को छात्र-छात्रा दोनों के प्रति समान व्यवहार करना चाहिए ताकि विद्यार्थी उनके प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षण को विकसित कर सके। शोध निष्कर्षतः छात्र व छात्राओं का शिक्षकों के व्यवहार के प्रति समान व सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

शोध का शीर्षक :

"माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षागत-व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन"

शोध की पृष्ठभूमि :

Good Teacher Know How To

Bring Out The Best in Students.

शिक्षा प्रणाली में एक अध्यापक का विद्यार्थियों के प्रति किया गया व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण होता है। विद्यालय के वातावरण को देखकर छात्र-छात्राओं के मन में बहुत-सी आकांक्षाएं उत्पन्न होती है, जिनकी पूर्ति करने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस पूर्णता की जाँच शिक्षण में प्रभाविकता, गुणवत्ता व महत्व के आधार पर कर सकते है।माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोर वर्ग के होते है, इस वर्ग में सही-गलत की भावना का विकास होना प्रारम्भ होता है, वे स्वयं के प्रत्यक्षण का निर्माण कर लेते है. एवं इसे ही उचित मानते है। छात्र-छात्रा शिक्षकों के कक्षागत-व्यवहार में उनके द्वारा किये गये व्यवहार, अनुप्रयोग में लायी जाने वाली शिक्षण विधियाँ, शिक्षण-कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन तथा समस्याओं के समाधान हेतु दिये गये परामर्श व निर्देशन के प्रति आत्म-सम्प्रत्ययों का निर्माण कर जाने है। इन सम्प्रत्ययों को ही वे सही मानते है। इसलिए कक्षागत-व्यवहार अनुगत हुआ तो छात्र-छात्राओं में सकारात्मक प्रत्यक्षण का विकास होगा।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कोरोना काल में डिजिटल इंडिया में कैशलेस ट्रांजेक्शन (एप्स) के प्रति जागरूकता का अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. मिनाक्षी शर्मा
व्याख्याता

प्रस्तुतकर्त्री
सुमन राठौड़
एम.एड.छात्रा

सारांश –

प्रस्तुत शोध कार्य कोरोनाकाल में विद्यार्थियों की डिजिटल इंडिया में कैशलेस ट्रांजेक्शन (एप्स) के प्रति जागरूकता से संबंधित है इसके अंतर्गत ई–वालेट एप्स के उपयोग व जानकारी को बताया गया है। जिससे कि लोगों को किसी भी प्रकार का सामान खरीदने के लिए बाहर नहीं जाना पड़े। बल्कि वे कैशलेस ट्रांजेक्शन के माध्यम से घर बैठे ही अपने कार्य को आसानी से कर सके। इसके लिए वे मोबाइल में ई–वॉलेट एप्स के माध्यम से भीम एप को डाउनलोड करके आसानी से पैसों का लेन–देन कर सकते है तथा इसके उपयोग व जानकारी के माध्यम से दैनिक जीवन के सम्पूर्ण कार्य आसानी से कर सकते है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कोरोन काल मे डिजिटल इंडिया मे कैशलेस ट्राजेक्शन (एप्स) के प्रति जागरूकता मे शहरी विद्यार्थियों का रुझान ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाई गई है।

प्रस्तावना –

भारत में विमुद्रीकरण (नोटबंदी) से पहले कैशलेस पेमेंट कोई बड़ा मुद्दा नहीं था। आम लोगों के बीच न तो इसका प्रचलन था और ही इसके प्रति जिज्ञासा और उत्साह। व्यावसायी वर्ग क्रेडिट कार्ड या फिर डेबिट कार्ड का उपयोग कैशलेस लेन–देन के लिए जरूर कर रहे थे। इसलिए कैशलेस ट्रांजेक्शन को बढ़ाने का प्रयास किया गया।

कालेधन, भ्रष्टाचार, जाली मुद्रा और आतंक के वित्त पोषण से निपटने के लिए, सरकार ने 8 नवम्बर 2016 को 500 और 1000 रुपये के नोटों पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया इसके बाद बैंकों और एटीएम से निकासी पर अधिकतम रोक लगाई गई।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"उच्च माध्यमिक स्तर के किषोर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

निर्देशिका

डॉ. मिनाक्षी शर्मा

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री

सुमन कुमारी शर्मा

(एम एड छात्रा)

सारांश –

दार्शनिक तथा वैज्ञानिकों ने जीवन व्यापार के अनेक प्रकार से व्याख्या की है। भारतीय दार्शनिक विचारधारा के अनुसार शरीर के रथ और जीवात्मा को रथ का यात्री माना गया है। मन इस रथ का सारथी है जो इच्छाओं के डोर से रथ को हांकता है। पाश्चात्य दर्शन में शास्त्र के आधार पर मन देह में स्थित उस तत्व को कहते है, जो ज्ञान प्राप्त करता है, इच्छा करता है और जिससे प्रेम, घृणा आदि रागात्मक वृत्तियां उत्पन्न होती है। इसी के द्वारा समस्त शारीरिक व मानसिक कार्य सम्पादित होते है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के किशोर छात्र व छात्राओं का 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों का व्यक्तित्व समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना –

इस पृथ्वी पर अगर हम नजर फैलाकर देखते है तो सबसे सुन्दर कृति मानव की ही नजर आती है। मानव पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और मानव का जीवन विकास की प्रक्रिया है। प्राणी के गर्भ में आने से लेकर प्रौढ़ता करने की स्थिति मानव विकास है। प्राणी गर्भ से लेकर प्रौढ़ता तक अनवरत विकास करता रहता है।

समस्या का औचित्य –

किशोरावस्था एक नया जन्म है इस अवस्था में उच्चतर और श्रेष्ठतर मानवीय गुण प्रकट होते है। किशोरावस्था, बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य की अवस्था है इस अवस्था में बालक में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते है जैसे – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सावेगित परिवर्तन, इन होने

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा उन्नयन (प्रोत्साहन) हेतु संचालित योजनाओं का अध्ययन।

निर्देशिका
राजू पंसारी
रीडर

प्रस्तुतकर्त्री
सुनीता कुमारी बिजारनियाँ
एम.एड.छात्रा

सारांश –

राजस्थान में विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा का सार्वजनिकरण शिक्षाविदों के चिंतन का विषय बन चुका है। विभिन्न प्रकार की योजनायें बालिकाओं की प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए चलायी जा रही है। अरबों रूपये इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे है। इन योजनाओं की उपादेयता व लाभो को जानना आवश्यक है। ये योजनायें सफल बालिका शिक्षा के प्रसार में सहयोग दे रही है या नहीं क्या ये अपने उद्देश्य में सफल हो पा रही हैं?

अतः इन योजनाओं की स्थिति का अध्ययन इन सरकारी प्रयासों के प्रति शिक्षकों की जानकारी का अध्ययन करने की दिशा में नवीन दृष्टि प्रदान करेगा। इस विश्वास के साथ अनुसंधानकर्त्ता के उक्त समस्या का चयन किया।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव के आंतरिक अंधकार को मिलाकर उसके अंतर्गत को प्रकाशित करती है। उस प्रकाश से मनुष्य को एक विशेष दृष्टि मिलती है। इसी दृष्टि को जीवन की दृष्टि भी कहा जाता है। जो हमें सांसारिक सत्य से रूबरू कराती है। यह जीवन दृष्टि शिक्षा से ही संभव है।

शिक्षा मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की वाहक है। जो किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास की दिशा को निर्धारित करती है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है। यह परिस्थितिजन्य है। जो परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रही है। अतः शिक्षा की युग व परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न सोपानों को पार करते हुए वर्तमान स्थिति तक पहुँची है।

कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि शिक्षा एक ऐसा उपकरण है जो भारत के सामाजिक, आर्थिक कल्याण में परिवर्तन ला सकती है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

www.ijcrt.org © 2022 IJCRT | Volume 10, Issue 5 May 2022 | ISSN: 2320-2882

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका

श्रीमती राजू पंसारी

व्याख्याता

प्रस्तुतकर्त्री

अंजू गुर्जर

एम.एड.छात्रा

सारांश –

मनुष्य एक सृजनशील प्राणी है। हर मनुष्य में सृजन करने की स्वाभाविक प्रवृति होती है। इसका प्रदर्शन वह बाल्यकाल से ही करने लगता है। वह अपनी जरूरत के अनुसार कुछ न कुछ बनाता है। मूल प्रवृति होने के कारण उसे पृथक से सीखना भी नही पड़ता है। वह अपने आसपास की परिस्थितियों से सृजन की शक्ति को विकसित कर लेता है। सृजन मनुष्य के भीतर छिपी प्रतिभा, सौंदर्य व कल्पना को साकार रूप देने का सशक्त माध्यम भी है।

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे जयपुर शहर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया है।

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बालक के समाजीकरण के विभिन्न तत्वों में परिवार का प्रमुख स्थान है, परिवार एक संस्था है जिसमें बालक का जन्म होता है, विकास होता है, परिवार शिक्षा का अनौपचारिक साधन है और इतना होते हुए भी उसका महत्व अपने मे अत्यधिक है, दो बच्चे शिक्षकों से प्रभावित होते हो, समान रूप से व्यवहार करते हो, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान, रूचियों, भाषण, व्यवहार और नैतिकता में अपने के कारण जहां से वे आते है, पूर्णतया भिन्न होते है।

माण्टेसरी ने बालक की शिक्षा मे घर का महत्वपूर्ण योगदान का अनुभव किया है, उन्होंने विद्यालय को बचपन का घर कहा है। घर ही वह स्थान है, जहां से महान गुण विकसित होते है, जिनकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित कानूनी प्रावधानों के प्रति उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गों की छात्राओं में जागरूकता का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. राजू पंसारी
रीडर

प्रस्तुतकर्त्री
मनीषा यादव
एम.एड.छात्रा

सारांश –

स्त्री–पुरुष दोनों ही समाज के सहजीवी सदस्य है, परन्तु यहाँ की शिक्षा, संस्कृति, धर्म, नीति, आदर्श आदि की दृष्टि से नारी का जितना विश्लेषण किया जाता है उतना विश्लेषण पुरुष का नहीं किया जाता। साहित्य, मनोविज्ञान एवं धर्मशास्त्र की तो प्राण–प्रतिष्ठा का केन्द्र बिन्दु ही नारी जान पड़ती है, ऐसा किस कारण से है? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने की दिशा में हमने कभी नहीं सोचा और रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, जड़ताओं तथा दुराग्रहों एवं कुतर्कों की आड़ मे नारी अस्तित्व एवं मर्यादा को उपेक्षित करते गये और इस त्रासदी का दुःख भोगने वाली नारी आर्य–जीवन दर्शन की मूलभूत चेतना से कट सी गई। वर्तमान समय मे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत तेजी से सम्पन्न हो रही है। इस प्रक्रिया से समाज की सभी दिशाओ मे परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों से समाज की विभिन्न इकाइयों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़े है। समाज की महत्वपूर्ण एवं आधारभूत इकाई परिवार है। परिवार की धुरी नारी है। युग चाहे जो भी रहा हो, समाज का विकास नारी के विकास पर ही आधारित रहा है। मनु महाराज ने मनु स्मृति में नारी की महत्ता का विवेचन करते हुए स्पष्ट लिखा है कि –

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:,
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फला: क्रिया:।"

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ो के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप मे कहा जा सकता है कि बालिकाओं में महिला उत्पीड़न से संबंधित कानून की जागरूकता पाई जाती है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"छात्रों की शैक्षिक प्रगति पर उनके अभिभावकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन।"

A STUDY OF EFFECT OF PARENTS SOCIAL AND ECONOMIC STATUS ON STUDENTS EDUCATIONAL PROGRESS

नीरजा गुप्ता
अस्सिटेंट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

ऋचा गुप्ता

अस्सिटेंट प्रोफेसर
स्वामी विवेकानन्द कॉलेज फॉर प्रोफेशनल स्टडीज

सौंथल, बीकानेर

1. शोध सार :–

वर्तमान समय में आमतौर पर देखा जाता है कि जिन परिवारों के छात्रों या छात्राओं के माता–पिता या अभिभावकों की आर्थिक स्थिति अच्छी–होती है, वह अपने बालक–बालिकाओं को अधिक शैक्षिक सुविधायें प्रदान करने के लिये प्रयासरत रहते है।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों में से कुछ छात्र बहुत गरीब परिवार के होते हैं जिससे उनकी शिक्षा सम्बन्धी समस्त सुविधायें पूर्ण नहीं हो पाती, उनकी शिक्षा बाधित होती है, गरीब परिवार से जुड़े हुए छात्रों को अपनी शिक्षा के लिये रूपये कमाने होते हैं, अतः छात्र अपनी शिक्षा पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दे पाता जिसका परिणाम यह होता है कि छात्रों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित होती है, जो अभिभावकों के आर्थिक व सामाजिक स्तर को प्रभावित करते है।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Blended Learning Approach for Early Childhood Education

Director

Ms. Kritika Tomar

(Asst. Prof.)

Presenter

Mrs. Priyanka Sharma

(M. Ed. Student)

Abstract

This literature review depicts the current reality of blended learning in schools and the systems that will need to transform to fully implement technology into the daily school experience, also This literature review examines the influence of on early childhood Education. It uses scholarly journals and articles to show the benefits and risks of technology use and how it can be used to compliment growth, development, and learning of young children.Blended learning needs rigorous efforts, right attitude, handsome budget and highly motivated teachers and students for its successful implementation. On other hand,Early Childhood Education examines how it develop the domains of: (a) social emotional, (b) cognitive, (c) physical motor, (d) language and literacy, and (e) mathematics. The purpose of this action research project was to determine if teaching with a blended learning approach increases student engagement in an early childhood classroom.

Keywords: blended learning, student engagement, early childhoodeducation

How Blended Learning Impacts Student Engagement in an Early Childhood Classroom

Student engagement is a desired element for teachers in any classroom across the world. Teachers want students to actively participate in their lessons, activities, and projects. They are constantly trying new ways to capture their students' attention and keep their interest. Early childhood teachers, along with other teachers, are trying to make sense of what strategies are research-based and what will make the greatest impact in their classroom.

1. Introduction

During the Covid 19 pandemic of 2019 - 2020 and the school shutdowns that occurred because of it, the importance of technology in educational settings became clear. Schools around the world closed and many attempted to use virtual learning to continue to provide education for students.Out of all the fads in education, blended learning has found its way into the classroom and will be staying for a while as more and more school districts push for implementing blended learning in their schools.Teachers are wondering if blended learning will be the answer to the long-lived question of figuring out what increases student engagement.

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन मूल्योंपर इंटरनेट के प्रयोगसेपड़नेवालेप्रभावका अध्ययन

–आरती शर्मा

अस्सिटेंट प्रोफेसर

बियानीगर्ल्सबी.एड. कॉलेज

शिक्षा एक स्वाभाविकओरसहजक्रियाहैऔरजन्मसेमृत्युपर्यन्तचलतीरहतीहै ।आजविज्ञान–ज्ञान के विस्फोट के युग मेंवैज्ञानिकउन्नति के साथ–साथशिक्षाजगतमेंभीवैज्ञानिकउपकरणोंकाउपयोग बढ़ताजारहाहै ।कम्प्यूटरआधुनिकप्रौद्योगिकीकासबसेबड़ा योगदानहैऔरइंटरनेट के साथ यह औरभीताकतवर बन जाताहै। शोध के अध्ययन हेतुसर्वेक्षणविधि काप्रयोगकियागयाहैतथा यादृच्छिकविधि द्वारा उच्चमाध्यमिक स्तर के 60 छात्र–छात्राओंकाचयनकियागयाहै ।इंटरनेट के जीवन मूल्योंपरप्रभावहेतुस्वनिर्मितप्रश्नावलीकाप्रयोगकियागयाहै। शोध कानिष्कर्ष यह निकलताहैकिवर्तमान समय मेंतकनीकी युगमेंछात्रोंकोशिक्षामेंसहयोग के लिए इंटरनेटकाप्रयोगकरनाचाहिए परन्तुअपने जीवन मूल्योंपरकोईनकारात्मकप्रभाव न पड़नेदें।

प्रस्तावना–

विद्यार्थी जीवन मेंइंटरनेटकाबहुतमहत्वहै ।इंटरनेटअनन्तसंभावनाओंकासाधनहैजोआपको घरबैठेहीउच्चशिक्षाप्राप्तकरनेमेंआपकीसहायताकरताहै ।आपमिनटोंमेंइंटरनेटपरगूगलकीसहायतासेकोईभीजानकारीप्राप्तकरसकतेहैं ।इसकीमददसेकोईभीअसाईनमेंटतैयारकरसकतेहैं ।ऑनलाईनटीचर्स व स्टूडेंटस मिल सकतेहैं व पढ़ाईकरसकतेहैं ।इंटरनेट के उपयोग ने एक नए युग की शुरूआतकरदीहैजिसनेविद्यार्थियों एवंशिक्षकोंमें एक उम्मीदजगादीहै ।इंटरनेटनेआजविद्यार्थियोंकोअपनीमर्जी, अपने समय औरअपनेस्थान के अनुसारअपने अध्ययन कोआगे बढ़ानेकाविकल्पदियाहै ।आधुनिक समय मेंई–लर्निंगप्रणालीभीअत्यन्तलोकप्रिय होरहीहै।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"Madhyamik star ke vidharthiyo ke aakanksha star ka unki srajnatmakta par padne wale prabhav"

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

—[illegible]

(AssistantProfessor)

(Biyanigroupofcollege,Jaipur)

हर व्यक्ति अपनी उच्च आकांक्षाओं, इच्छाओं और अभिलाषाओं की [illegible] पूर्ण करना चाहता है जिसे अपनी [illegible] की सीमाओं के कारण अथवा परिस्थितिजन्य [illegible] के कारण वह [illegible] प्राप्त नहीं कर सकता है। अपनी [illegible] की पूर्ति अपनी [illegible] में खोजता है।

इस प्रकार हर व्यक्ति, बालक आकांक्षा करते हैं उन आकांक्षाओं को पूर्ण करने की कोशिश करते है।

इन प्रतिस्पर्धाओं के युग में हर व्यक्ति इस दौड़ में आगे रहना चाहता है कि आने वाले समय में [illegible] का [illegible] अपने लिए स्थान सुरक्षित कर सके। बालकों को कैसे आगे बढ़ना है वे उनकी आकांक्षा पर निर्भर करता है।

बालक के अन्दर [illegible] की, कुछ नया करने की [illegible] छिपी होती है। किसी में [illegible], किसी में [illegible] करने की, किसी में लेखन का चित्र बनाने की, कोई [illegible] में तो कोई पढ़ने में आगे। [illegible] है तो उसके अन्दर छिपी [illegible] को ढूंढने की।

प्रस्तावना :-

शिक्षा वह प्रकाश है जिसमें [illegible] एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी को, बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विचारों तथा परम्पराओं आदि। सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश प्रेम तथा त्याग भावना प्रस्फुटित हो जाती है।

आकांक्षाएँ यदि धनात्मक होती है तो बालक का व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन अच्छा रहता है परन्तु यदि आकांक्षाएँ ऋणात्मक होती है तो बालक का व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन बिगड़ जाता है।

बालक में सृजनात्मकता का विकास उस समय सामान्य और अच्छा होता है जब बालक में उपलब्धि के लिए आकांक्षाएँ धनात्मक होती है। बालक में जितना अधिक आकांक्षा स्तर होगा वह उतना ही अधिक सृजनशील होगा।

शोध के उद्देश्य :-

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन।
3. गैरसरकारीविद्यालयोंमेंअध्ययनरतविद्यार्थियोंकीसृजनात्मकताकाअध्ययन।

PRINCIPAL
BIYANI GIRLS B.ED. COLLEGE
SEC-3, VIDHYADHAR NAGAR, JAIPUR

Registration ID List of ICSSR

RegID	Paper Title	Author 1
219300	CHAPE MEIN ADHYANARAT UCCH MADHMIK STAR	Smt. Trupti Saini
219299	CONSTRUCTION OF A TOOL TO STUDY SAFETY AND SECURITY OF CHILDREN IN SCHOOLS	Ms. Sunita Sharma
219298	GRAMIN VA SEHRI SHISHAN PRASHIKSHANARTHIYO	Dr. Ved Prakash Sharma
219297	KASHA 9 KI VIGYAN KI PATHYAPUSTHAK MEIN ANTARNIHIT	Soni Shekhawat
219296	YUVAO KE VYAKTITAV VIKAS MEIN YOG KI BHUMIKA KA ADHYAN	Sarita Parik
219294	COVID-19 BHAUGOLIK PRABHAV EK VISHLESHNATMAK ADHYAN	Virendra Kumar
219293	KALA ETHIHAS MEIN ANUSANDHAN EVEM VISHLESHNATMAK ADHYAN	Dr. Ramakant Gautam
219292	JAIPUR KE SHEHRI AVEM GRAMIN UCCH MADHMIK SCHOOL	Ranjana Parik
219290	SHA SHIKSHA BALAK TATHA BALIKA VIDHAYALO KE VIDHAYARTHI	Dr. Rajendra Singh
219289	MADHMIK STAR KE SHIKSHKO KE KASHAGAT VYAVAHAR	Smt. Pushpa Kumavat
219288	SHRIMAD BHAGVAT GEETA SHIKSHA DARSHAN MEIN NIHIT MULYO	Priyanka Biyani
219287	ACCHE VA BURE SPARSH KE PRATI PRATHMIK VIDHAYALO KE ADHYAPAK	Smt. Dr. Aabha Sharma
219286	UCCH MADHMIK STAR KE KISHOR BALIKAO KE VYATIGAT SAMAJIK	Neelam Kumari
219284	UCCH MADHMIK STAR KE KISHOR BALIKAO KE VYATIGAT SAMAJIK	Neelam Kumari
219283	A STUDY ON ADJUSTMENT AMONG LOCAL AND NON LOCAL STUDENTS STUDYING IN COACHING INSTITUTE	Mukesh Kumari
219282	�A STUDY OF DIAGNOSTIC AND REMEDIAL TEACHING OF DIFFICULTIES IN READING & WRITING ERRORS IN ENGLISH LANGUAGE AT UPPER PRIMARY LEVEL	Ms. Purva Gautam
219281	SNATAK STAR KE VIDHARTHIYO MEIN NIJTA KE ADHIKAR KE PRATI JAGRUKTA KA ADHYAN	Dr. Aarti Gupta

219279	A STUDY OF EFFECT OF PEER PRESSURE ON OBEDIENCE/DISOBEDIENCE BEHAVIOR OF ADOLESCENTS	Dr. Sarika Sharma
219278	ABHIBHAVKO KI APEKSHAO KA PRATHMIK STAR KE VIDHARTHIYO	Dr. Sarika Sharma
219277	JAIPUR JILE KE PRATHMIK STAR PER ADHYAPAK ABHIBHAVAK	Dr. Manish Saini
219276	BETI BACHO BETI PADHAO ABHIYAN KE PRATI ABHIBHAVAKO KI ABHIVRATI	Dr. Ekta Parik
219275	MAHILA INTERNET JAGRUKTA ABHIYAN KI SATHARKTA KA ADHYAN	Dr. Bharti Sharma
219257	INTRODUCTION OF DIFFERENT TYPES OF DATA COLLECTION INSTRUMENTS	V.K Kumar Parik
219256	PRAKATI VA PRAKAR	Vineeta Naama
219255	DEVELOPMENT OF TEACHING EFFECTIVENESS SCALE FOR TEACHERS TEACHING ESL OR EFL	Sweety Acharya
219254	MADHMIK STAR KE VIDHYARTHI KA AKANSHA STAR	Sunita Kumavat
219253	MANSHIK SWASTH AVEM AATHM PRABHAVKARITA ADHYAN	Suman Kunwar Rathod
219252	NATIONAL SEMINAR ON METHODS OF MEASURING AND INTERPRETATION OF OUTCOMES IN EDUCATIONAL AND SOCIAL RESEARCH	Soma Guha
219251	DEVELOPMENT OF RESEARCH TOOL FOR MEASURING THE EFFECTIVENESS OF BLENDED LEARNING AMONG THE STUDENTS.	Smita Tanwar
219250	DATA COLLECTION TOOL IN EDUCATIONAL RESEARCH	SMIGDHA MANJARI
219247	KAANCHI BASTI KE KISOR AVEM KISHORIA MANSIK SWASTH	Dr. Aabha Sharma
219245	B.ED INTERNSHIP KI VASTUSTHITI KE ADHYAN MEIN SHODH	Shiwani Bhojak
219244	SHIKSHAN KI KAHANI VIDHYA KA VIDHYARTHI KANAITIK	Smt. Satyaprabha Sharma
219243	MADHMIK STAR PER SAMAVESHI SHIKSHA KE KRIYANVAN	Dr. Saroj Chaudhari
219242	CONTRIVING RESEARCH ETHICS WHILE STANDARDIZING RESEARCH TOOL	Dr. Sarla Nirankari
219241	A STUDY OF THE STUDENT'S PERCEPTION TOWARDS SECONDARY SCHOOL TEACHER'S CLASSROOM BEHAVIOR	Sarita Khaitan
219240	CHATRO KI SHAKSHIK PRAGATI PER UNKE ABHIBHAVKO	Neeraj Gupta

219238	MADHMIK STAR KE SHEHRI SHETR KE RAJKIY VA NIJI VIDHALAY	Dr. Mausam Parik
219237	A STUDY OF MENTAL HEALTH CORRELATES OF MARITA L ADJUSTMENT AMONG WORKING AND NON WORKING WOMEN	Mrs. Renuka Sain
219236	SHAHBHAGI GRAMIN MULYANKAN TAKNEK KA SHAISNEEK	Rekha Jandir
219235	METHODS OF MEASURING AND INTERPRETATION OF OUTCOMES IN EDUCATIONAL AND SOCIAL RESEARCH	REKHA CHOPRA
219234	QUALITATIVE RESEARCH: METHODOLOGY, DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION	Dr. ReenaUniyal Tiwari
219233	BHARAT KI GATISHEL VIDESH NITI MODI SHAHSHAN KAAL KE SHANDARB MEIN EK ADHYAN	Ramchandra Dudi
219232	DATA COLLECTION INSTRUMENTS IN EDUCATIONAL RESEARCH	Dr. Amit Ahuja
219231	THE RELATIONSHIP BETWEEN BURNOUT AND TEACHING EFFECTIVENESS IN SR. SEC. SCHOOLS IN JAIPUR�AN ANALYSIS	Dr. Kalpana Sengar
219230	SHIKSHA 11 KI VANIJYA VISHAY KI VYAVSHAY ADHYANAN	Pinki Sharma
219229	UCCH MADHMIK STAR KE SAMANAY AVEM SHAH SHIKSHA	Dr. Panchuram Meena
219228	VIBHIN KE PRAKAR KE AAKADE SANGRAH UPKARDO KA PARICHAY	Omprakash
219225	AT STUDY THE FAMILY ENVIRONMENT AS CORRELATES OF LIFE SATISFACTION AMONG WOMEN	Mrs. Neetu Singh
219223	MADHMIK STAR KE VIDHYARTHI SHIKSHAKO KI SWACH ABHIYAN	Neeraj Nathawat
219222	MADHMIK VIDHYALAY KE SHIKSHAGAT VATAVARAN KE SARVAGIN	Dr. Shipra Gupta
219221	CONCEPET AND ETHICS OF DEVELOPING A RESEARCH TOOL	Navin Kumar Parik
219220	THE IMPACT OF COVID-19 ON STUDENT EXPERIENCES AND EXPECTATIONS: EVIDENCE FROM A SURVEY	Ms. Monika Pundhir
219219	SHIKSHAK PRASHIKSHAN MAHAVIDHYALAY PRABHANDAN DWARA	Dr. Vedprakash Sharma
219217	INTRODUCTION TO DATA COLLECTION INSTRUMENTS	Ms. Mahak Chhabra
219216	??????? ?????? ?????? ??? ????????? : ????? ????? ?? ?????	Krishna Kumar Singh

219215	KISHOR VIDHYARTHI PER NAYI RASTRIY SHIKSHA NITI 2020	Dr. Manju Sharma
219214	SAMAJIK ANUSANDHAN THATH SANKALAN KI PRAVIDHIYA UPKARAN	Kausalya Arora
219213	INTERPRETATION OF DIFFERENT PARAMETRIC AND NON-PARAMETRIC STATISTICS AND THEIR IMPORTANCE IN RESEARCH	Dr Rahul Kumar
219210	SARKARI AVEM NIJI VIDHAYALAY KE KALA VARG	Dr. Pragya Shrivastav
219209	RESEARCH B. STUDY OF ATTITUDE TOWARDS LIFE SKILL EDUCATION OF ED TRAINESS	Dr. Aarti Sharma
219208	RESEARCH B. STUDY OF ATTITUDE TOWARDS LIFE SKILL EDUCATION OF ED TRAINESS	Dr. Aarti Sharma
219207	SHASHATAR TAHTH SANKALAN KI EK PRAVIDHI KE ROOP MEIN	Smt. Deepmala
219204	LIMITATIONS INVOLVED IN A TWO-SAMPLE INDEPENDENT T-TEST	Dr. Barkha Rani
219203	UCCH MADHMIK STAR KE VIDHARTHI KE JEEVAN MULYOPAR	Aarti Sharma
219201	DATA COLLECTING INSTRUMENTS AND TOOLS IN RESEARCH	Dr. Anupama Goyal
219199	B ED PRASHIDHARTHIYO MEIN SHIKSHA KA ADHIKAR	Manju Sharma
219198	SHRIMAD BHAGWADGEETA MEIN NIHIT SHANTI SHIKSHA	Dr. Vinod Kumar
219197	VIDHYARTHI KI VYAVSAHIYIK SHIKSHA	Dr. Manju Sharma
219172	UCCH MADHMIK STAR PER BAALIKA SHIKSHA UNNAYAN	Raju Pansari
219171	UCCH MADHMIK STAR KE VIDHYARTHIYO MEIN CORONA KAAL MEIN DIGITAL INDIA	Dr. Meenakshi Sharma
219170	UCCH MADHMIK STAR KE VIDHYARTHIYO KE VYAKTIGAT	Dr. Meenakshi Sharma
219169	ADHYAPAK SHIKSHA SANSTHANO KE B ED KAYKRAMO KE BHAVI SHIKSHKO	Dr. Shipra Gupta
219168	SHA SHASHIK JAGRUKTA KAYKRAMI KA SAMAJIK ANDHVISHWAS	Dr. Aarti Gupta
219166	SHARMIKO KE BALAKO PER ONLINE SHIKSHA KE PRABHAV KA ADHYAN	Dr. Bharti Sharma
219165	UCCH MADHMIK STAR KE VIDHYARTHYO KI VYAVYASHIK COURSE	Dr. Ekta Parik
219164	KANSMAK DWIVARSHIY PATHYAKRAM MEIN ADHYANARAT VIGYAN	Priyanka Soni

219163	BLENDED LEARNING APPROACH FOR EARLY CHILDHOOD EDUCATION	Ms. Kritika Tomar
219162	VIBHINN SAMAJIK KURITIYO KE KHILAF SARKAR KE DWARA BANAI NITIYO	Dr Aarti Gupta
219161	UCCH MADHMIK STAR KE VIDHYARTHIYO KA MAKE IN INDIA YOGNA	Shrimati Trupti
219160	VARTAMAN PARISTITHIIYO MEIN SHRIMADBHAGWAT GEETA	Dr. Bharti Sharma
219159	BPL KE PARIWAR KE VIDHYARTHIYO MEIN SANSTHAGAT DABAB	Dr. Manish Kumar Saini
219158	BALIKA SWASTH VA SHIKSHA SE SAMBHANDIT YOJNAOKE PRATI	Dr. Aarti Gupta
219157	A COMPARATIVE STUDY OF SCIENTIFIC ATTITUDE AND ENVIRONMENTAL AWARENESS AMONG SENIOR SECONDARY SCHOOL STUDENTS OF JAIPUR CITY	Dr. Meenakshi Tiwari
219156	YOG KA YUVAO KI SAVIGIK STIRTA PER PADNE VAALE PRABHAV KA ADHYAN	Dr. Prisha Gupta
219155	UCCH MADHMIK STAR KI CHATRAO KE VYAKTITVA MULYO	Dr. Ekta Parik
219154	MAHILA UTAPIDIN SE SAMBHANDIT KANONI PRAVDHANO KE PRATI	Dr. Raju Pansari
219153	SHRIMADBHAGWAT GEETA MEIN NIHIRIT ADHYATMIK MULYO KA VARTMAN	Dr. Ekta Parik
219152	SOCIAL MEDIA KA UCCH MADHMIK STAR KE VIDHYARTHIYO KE SAMAJIK	Dr. Shipra Gupta
219151	UCCH MADHMIK VIDHYALAY KA ADHYAPAK MEIN BAN OUT KA ADHYAN	Krishna Kumari Nawariya
219150	UCCH SHIKSHA STAR MEIN VIGYAN SHANKAY KE VIDHYARTHIYO	Kavita Soni
219149	BAHUMADHYAM UPAGAM KA VIDHYARTHIYO KE VYAKTITVA AVEIM SHAKSHIK	Dr. Manish Saini
219148	UCCH MADHMIK STAR PER JEEVVIGYAN TATHA KALA VARG VISHAY	Dr. Aarti Gupta
219146	MADHMIK STAR PER ADHYANARAT VIDHYARTHIYO KA PARYAVARAN	Smt. Trupti Saini
219145	SHIKSHAK PRASHIKSHAK ADHYANARAT VIDHYARTHIYO KA SHIKSHA	Deepa Mehta

219144	MADHMIK STAR KE VIDHYARTHI KI ADHISHAMTA MEIN KOCHING	Bhavya Sharma
219143	MADHMIK STAR KE VIDHYARTHI KI KALA SHIKSHA KE PRATI	Dr. Ekta Parik
219142	UCCH MADHMIK STAR KE SARKARI VA NIJI VIDHYALO KE CHATRO	Archana Sharma
219141	UCCH MADHMIK STAR KE VIDYARTHI PER HINDI SAMACHAR PATRO	Smt Trupti Saini
219140	VIGYAN SANKAY KE SHIKSHAKO KE VYAKTITVA KA VIDYARTHIYO	Dr. Shipra Gupta
RegID	Paper Title	Author 1
RegID	Paper Title	Author 1
219139	MADHYMIK STAR PER ADHYANARAT VIDHYARTHIYO MEIN SWACCH	Dr. Bharti Sharma
219138	UCCH PRATHMIK STAR KE VIDYARTHIYO KI SAJNATHMAKTA PER UNKE	Smt. Raju Pansari
219137	UCCH MADHMIK STAR KE VIDYARTHI KA YOG KE PRATI ABHIVRATI	Dr. Manish Saini
219136	?????? ????????????????? ??? ?? ??????? ?? ?????? ?? ????? ???????? ?? ??????	???? ??????
219135	BACHCHO KI NISHULK V ANIVARY SHIKSHA KE PRATI	Dr. Shipra Gupta
219134	UCHCH MADHYAMIK STAR PAR BHUGOL VISHAY KE SHISHAKAN MEIN ADHIGAM	Dr. Ekta Parik
216818	????? ????? ?? ????? ?????? ???????????????? ??? ???????? ?? ??????	Dr Shipra Gupta